प्रारंभिक पालि की कुंजी

(की टु पालि प्राइमर का हिन्दी अनुवाद)

लिली डे सिल्वा
एम.ए., पीएच.डी.

विपश्यना विशोधन विन्यास

प्रारंभिक पालि की कुंजी

(की टु पालि प्राइमर का हिन्दी अनुवाद)

लिली डे सिल्वा, एम. ए., पीएच. डी.

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

H61 - प्रारंभिक पालि की कुंजी

© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : मार्च २०११

ISBN 978-81-7414-324-2

प्रकाशक:

विपश्यना विशोधन विन्यास

धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२ ४०३
जिला- नाशिक, महाराष्ट्र
फोन: ०२५५३-२४४९९८, २४४०७६, २४४०८६,
२४३७१२, २४३२३८; फैक्स: ९१-२५५३-२४४१७६
Email: vri_admin@dhamma.net.in
info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org

मुद्रकः

अपोलो प्रिंटिंग प्रेस

जी-२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी.,
सातपुर, नाशिक-४२२००७, महाराष्ट्र

प्रारंभिक पालि की कुंजी

विषय-सूची

आमुख १
अभ्यास - १ .... ३
अभ्यास - २ .... ४
अभ्यास - ३ .... ६
अभ्यास - ४ .... ८
अभ्यास - ५ .... १०
अभ्यास - ६ .... १२
अभ्यास - ७ .... १४
अभ्यास - ८ .... १६
अभ्यास - ९ .... १९
अभ्यास - १० .... २१
अभ्यास - ११ .... २३
अभ्यास - १२ .... २६
अभ्यास - १३ .... २८
अभ्यास - १४ .... ३१
अभ्यास - १५ .... ३३
अभ्यास - १६ .... ३५
अभ्यास - १७ .... ३६
अभ्यास - १८ .... ३८
अभ्यास - १९ .... ३९
अभ्यास - २० .... ४२
अभ्यास - २१ .... ४३
अभ्यास - २२ .... ४६
अभ्यास - २३ .... ४८
अभ्यास - २४ .... ४९
अभ्यास - २५ .... ५१
अभ्यास - २६ .... ५४
अभ्यास - २७ .... ५५
अभ्यास - २८ .... ५७
अभ्यास - २९ .... ५९
अभ्यास - ३० .... ६१
अभ्यास - ३१ .... ६३
अभ्यास - ३२ .... ६५
विपश्यना साहित्य **६७**
विपश्यना साधना केंद्र **७१**

आचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का एवं श्रीमती इलायचीदेवी गोयन्का

शीलवान के ध्यान से, प्रज्ञा जाग्रत होय।
अंतर्तम की ग्रंथियां, सभी विमोचित होंय॥

आमुख

विपश्यना शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित लिली डे सिल्वा कृत प्रारंभिक पालि, पालि पढ़ने वाले छात्रों के लिए प्रारंभिक भूमिका है। रचना के माध्यम से व्याकरण सिखाने के सिद्धान्त पर यह पुस्तक लिखी गयी है जिसमें क्रमशः विस्तृत शब्दावली का प्रयोग किया गया है। पालि से हिन्दी तथा हिन्दी से पालि में अनुवाद के लिए अभ्यास हर पाठ का अनिवार्य भाग है।

जिन विद्यार्थियों ने इस पुस्तक को उपयोगी पाया है उनका यह अनुरोध था कि प्रारंभिक पालि में दिये गये अभ्यासों के उत्तर भी प्राप्त कराये जायं। प्रो. लिली डे सिल्वा ने कृपा कर उत्तरों को संकलित किया है।

आशा की जाती है कि यह पुस्तक बुद्ध की मातृभाषा पालि सीखने वालों के लिए बड़े काम की होगी।

विपश्यना विशोधन विन्यास

अभ्यास - १

हिन्दी में अनुवाद

१. राजा खाता है।
२. पुत्र सोते हैं।
३. व्यापारी सोते हैं।
४. बुद्ध देखते हैं।
५. लड़का दौड़ता है।
६. मामा (हल) जोतता है।
७. ब्राह्मण लोग बोलते हैं।
८. मित्र जाते हैं।
९. किसान (खाना) पकाते हैं।
१०. आदमी काटता है।
११. लोग दौड़ते हैं।
१२. मित्र खाता है।
१३. तथागत बोलते हैं।
१४. आदमी पकाता है।
१५. मित्र जोतते हैं।
१६. बुद्ध आते हैं।

पालि में अनुवाद

१. पुत्ता धावन्ति।
२. मातुलो पस्सति।
३. बुद्धो आगच्छति।
४. कुमारा भुञ्जन्ति।
५. वाणिजा गच्छन्ति।
६. मनुस्सो/पुरिसो/नरो सयति।
७. भूपाला गच्छन्ति।
८. ब्राह्मणो छिन्दति।
९. मित्ता भासन्ति।

१०. कस्सको कसति।
११. वाणिजो आगच्छति।
१२. पुत्ता छिन्दन्ति।
१३. मातुला भासन्ति।
१४. कुमारो धावति।
१५. मित्तो भासति।
१६. बुद्धो पस्सति।

अभ्यास - २

हिन्दी में अनुवाद

१. तथागत धर्म कहते हैं।
२. ब्राह्मण भात खाते हैं।
३. मनुष्य सूरज देखता है।
४. लड़के गीदड़ों को मारते हैं।
५. भिखारी भात मांगते हैं।
६. किसान गड्ढे खोदते हैं।
७. मित्र गांव आता है।
८. राजा मनुष्यों की रक्षा करता है।
९. पुत्र पर्वत की ओर जाते हैं।
१०. लड़का बुद्ध की वन्दना करता है।
११. व्यापारी पात्र लाते हैं।
१२. मनुष्य विहार जाता है।
१३. कुत्ते पर्वत की ओर दौड़ते हैं।
१४. गीदड़ गाँव आते हैं।
१५. ब्राह्मण मित्रों को लाते हैं।
१६. राजा सुगत की वन्दना करते हैं।
१७. भिखारी सोते हैं।
१८. मित्र कुत्तों को ले जाते हैं।
१९. पुत्र चन्द्रमा देखता है।

२०. किसान गाँव की ओर दौड़ता है।
२१. व्यापारी वृक्षों को काटते हैं।
२२. मनुष्य गीदड़ को तीर से बींधता है।
२३. लड़का भात खाता है।
२४. भिखारी कुत्ते को मारता है।
२५. मित्र पर्वतों पर चढ़ते हैं।

पालि में अनुवाद

१. मनुस्सा/पुरिसा/नरा विहारं गच्छन्ति।
२. कस्सका पब्बते आरुहन्ति।
३. ब्राह्मणो भत्तं/ओदनं भुञ्जति।
४. बुद्धो कुमारे पस्सति।
५. मातुला पत्ते नीहरन्ति।
६. पुत्तो सुनखं/सोणं/कुक्कुरं रक्खति।
७. भूपालो बुद्धं वन्दति।
८. वाणिजो कुमारं आहरति।
९. मित्ता/सहायका/सहाया ब्राह्मणं वन्दन्ति।
१०. याचका भत्तं याचन्ति।
११. वाणिजा सिगाले विज्झन्ति।
१२. कुमारा पब्बतं आरुहन्ति।
१३. कस्सको गामं धावति।
१४. वाणिजो भत्तं पचति।
१५. पुत्ता मातुलं वन्दन्ति।
१६. भूपाला मनुस्से रक्खन्ति।
१७. बुद्धो विहारं आगच्छति।
१८. पुरिसा ओरुहन्ति।
१९. कस्सका आवाटे खणन्ति।
२०. वाणिजो धावति।
२१. सुनखो/सोणो/कुक्कुरो चन्दं पस्सति।
२२. कुमारा रुक्खे आरुहन्ति।
२३. ब्राह्मणो पत्तं आहरति।

२४. याचको सयति।
२५. भूपालो बुद्धं पस्सति।

अभ्यास - ३

हिन्दी में अनुवाद

१. बुद्ध शिष्यों के साथ विहार जाते हैं।
२. मनुष्य पुत्र के साथ द्वीप पर दौड़कर जाता है
३. किसान वाण से गीदड़ को बींधता है।
४. ब्राह्मण मामा के साथ पर्वत पर चढ़ते हैं।
५. पुत्र पैरों से कुत्तों को मारते हैं।
६. मामा पुत्रों के साथ रथ से गाँव आते हैं।
७. लड़के हाथों से पात्र लाते हैं।
८. चोर मार्ग से घोड़े का हरण करता है।
९. किसान गड्ढे में उतरता है।
१०. राजा पण्डितों के साथ श्रमणों को देखते हैं।
११. पंडित राजा के साथ तथागत की वंदना करते हैं।
१२. पुत्र मित्र के साथ भात खाते हैं।
१३. व्यापारी पत्थर से मृग को मारता है।
१४. कुत्ते पैरों से गड्ढे खोदते हैं।
१५. ब्राह्मण पुत्र के साथ सूरज की वंदना करता है।
१६. किसान कुत्तों के साथ वृक्षों की रक्षा करता है।
१७. सुगत शिष्यों के साथ विहार आते हैं।
१८. भिखारी पात्र में भात लाता है।
१९. पंडित स्वर्ग जाते हैं।
२०. लड़के घोड़ों के साथ गाँव की ओर दौड़ते हैं।
२१. चोर तलवार से मनुष्य पर प्रहार करता है।
२२. व्यापारी गाड़ी से अनेक दीपक लाता है।
२३. घोड़े मार्ग पर दौड़ते हैं।
२४. गीदड़ मृगों के साथ पर्वत की ओर दौड़ते हैं।

२५. राजा पंडित के साथ मनुष्यों की रक्षा करता है।

पालि में अनुवाद

१. समणो मित्तेन सह बुद्धं पस्सति।
२. सावका तथागतेन सह विहारं गच्छन्ति।
३. अस्सो सोणेहि सद्धिं पब्बतं धावति।
४. कुमारो पासाणेन दीपं पहरति।
५. वाणिजा सरेहि मिगे विज्झन्ति।
६. कस्सका हत्थेहि आवाटे खणन्ति।
७. कुमारा मातुलेन सद्धिं रथेन विहारं गच्छन्ति।
८. ब्राह्मणो मित्तेन सह भत्तं/ओदनं पचति।
९. भूपालो पण्डितेहि सह दीपं रक्खति।
१०. भूपाला पुत्तेहि सद्धिं समणे वन्दन्ति।
११. चोरा अस्से दीपं आहरन्ति।
१२. सावका पुरिसेहि सह पब्बते आरुहन्ति।
१३. वाणिजा कस्सकेहि सद्धिं रुक्खे छिन्दन्ति।
१४. याचको मित्तेन सह आवाटं खणति।
१५. ब्राह्मणो मातुलेहि सह चन्दं पस्सति।
१६. चोरो खग्गेन अस्सं पहरति।
१७. पुत्तो पत्तेन ओदनं आहरति।
१८. कुमारा सुनखेहि सह पब्बतं धावन्ति।
१९. वाणिजा कस्सकेहि सद्धिं सकटेहि गामं आगच्छन्ति।
२०. मातुला पुत्तेहि सह रथेहि विहारं आगच्छन्ति।
२१. सिगाला मग्गेन पब्बतं धावन्ति।
२२. कुक्कुरा पादेहि आवाटे खणन्ति।
२३. नरो हत्थेन ककचं हरति।
२४. समणा सग्गं गच्छन्ति।
२५. बुद्धो सावकेहि सद्धिं गामं आगच्छति।

अभ्यास - ४

४. हिन्दी में अनुवाद

१. चोर गाँव से पर्वत की ओर दौड़ते हैं।
२. लड़का मामा से भात माँगता है।
३. लड़का सीढ़ी से गिरता है।
४. मामा वस्त्र धोते हैं।
५. धीवर टोकरियों से मछलियाँ लाते हैं।
६. उपासक श्रमणों के साथ विहार से निकलते हैं।
७. ब्राह्मण आरा से वृक्ष काटते हैं।
८. लड़के मित्रों के साथ राजा को देखते हैं।
९. व्यापारी घोड़े के साथ पर्वत से उतरता है।
१०. भिखारी किसान से कुत्ता मांगता है।
११. सांप पर्वतों से गांव में आते हैं
१२. मंत्री वाण से हिरणों को बींधते हैं।
१३. चोर गांव से गाड़ी द्वारा वस्त्रों की चोरी करता है।
१४. राजा मंत्रियों के साथ रथ से महल आता है।
१५. सूअर पैरों से गड्ढे खोदते हैं।
१६. लड़का मित्रों के साथ वस्त्र धोता है।
१७. श्रमण गाँव से उपासकों के साथ निकलते हैं।
१८. कुत्ता टोकरी से मछली खाता है।
१९. मित्र पुत्र से कुत्ता मांगता है।
२०. बुद्ध श्रावकों से पूछते हैं।
२१. मंत्री पंडितों से प्रश्न पूछते हैं।
२२. धोबी मित्र के साथ वस्त्र धोता है।
२३. मछलियाँ टोकरी से गिरती हैं।
२४. चोर सूअरों को पत्थर मारते हैं।
२५. मंत्री महल से सुग्गा लाता है।

पालि में अनुवाद

१. अस्सा गामम्हा पब्बतं धावन्ति।
२. वाणिजा उपासकेहि सद्धिं दीपम्हा विहारं आगच्छन्ति।
३. चोरा सरेहि वराहे विज्झन्ति।
४. उपासको समणा धम्मं पुच्छति।
५. दारको मित्तेन सद्धिं पासाणम्हा पतति।
६. सोणो/सुनखो/कुक्कुरो कुमारं डसति।
७. अमच्चा भूपालेन सह पासादम्हा निक्खमन्ति।
८. पुरिसो दीपम्हा मिगं आहरति।
९. कस्सको रुक्खम्हा ओरुहति।
१०. सुनखा अस्सेहि सह मग्गेन धावन्ति।
११. कुमारा वाणिजेहि दीपे हरन्ति।
१२. चोरो सोपानम्हा ओरुहति।
१३. वाणिजा पब्बतेहि सुके आहरन्ति।
१४. अस्सो पादेन सप्पं पहरति।
१५. मातुलो मित्तेहि सह पब्बतेहि समणे पस्सति।
१६. वाणिजा दीपम्हा अस्से पासादं आहरन्ति।
१७. अमच्चो चोरं पुच्छति।
१८. कस्सको रजकेन सद्धिं ओदनं भुञ्जति।
१९. दारको सोपानम्हा पतति।
२०. धीवरो मातुलेन सह पब्बतं आरुहति।
२१. याचको सनुखेन सह सयति।
२२. भूपाला अमच्चेहि सद्धिं दीपे रक्खन्ति।
२३. भूपालो पासादम्हा बुद्धं वन्दति।
२४. नरो खग्गेन सप्पं हनति।
२५. धीवरा सकटेहि मच्छे गामं आहरन्ति।
२६. वराहा गामम्हा पब्बतं धावन्ति।
२७. उपासका पण्डिता पञ्हे पुच्छन्ति।
२८. पुत्तो रुक्खम्हा सुवं आहरति।
२९. पण्डिता विहारं गच्छन्ति।
३०. सावका मग्गेन गामं गच्छन्ति।

अभ्यास - ५

हिन्दी में अनुवाद

१. व्यापारी धोबी को धोती देता है।
२. वैद्य आचार्य के लिए दीपक लाता है।
३. मृग चट्टान से पर्वत की ओर दौड़ते हैं।
४. मनुष्य बुद्धों से धर्म प्राप्त करते हैं।
५. मनुष्य वैद्य के लिए गाड़ी खींचता है।
६. लडका हाथ में भिखारी के लिए भात लाता है।
७. भिखारी आचार्य के लिए गड्ढा खोदता है।
८. धोबी मंत्रियों को कपड़े देता है।
९. ब्राह्मण श्रावकों के लिए चारपाइयां लाता है।
१०. बन्दर वृक्ष से गिरता है, कुत्ता बन्दर को काटता है।
११. मछुवारे टोकरियों में मंत्रियों के लिए मछलियां लाते हैं।
१२. किसान व्यापारी के लिए वृक्ष काटता है।
१३. चोर कुदाली से आचार्य के लिए गड्ढा खोदता है।
१४. वैद्य पुत्रों के लिए भात पकाता है।
१५. तपस्वी शिकारी के साथ बात करता है।
१६. शिकारी तपस्वी को दीप/बाघ की खाल देता है।
१७. शेर मृगों को मारते हैं।
१८. बन्दर पुत्र के साथ वृक्ष पर चढ़ता है।
१९. श्रमण उपासकों से भात प्राप्त करते हैं।
२०. बच्चे रोते हैं, लड़का हँसता है, मामा लड़के को मारता है।
२१. बन्दर पर्वत से उतरते हैं, वृक्षों पर चढ़ते हैं।
२२. चोर रथ में बैठते हैं, मंत्री रथ को त्यागते हैं।
२३. आचार्य लड़के के लिए वृक्ष से तोता लाते हैं।
२४. शिकारी पर्वत से बकरी को खींच कर लाता है।
२५. तपस्वी पर्वत से शेर को देखते हैं।
२६. व्यापारी किसानों से लाभ प्राप्त करते हैं।

२७. शिकारी व्यापारियों के लिए सूअरों को मारता है।
२८. तपस्वी आचार्य से प्रश्न पूछते हैं।
२९. पुत्र पलंग से गिरता है।
३०. लडके मित्रों के साथ नहाते हैं।

पालि में अनुवाद

१. वाणिजा अमच्चानं अस्से आहरन्ति।
२. लुद्दको वाणिजाय अजं हनति।
३. पुरिसो कस्सकाय/कस्सकस्स ककचेन रुक्खे छिन्दति।
४. मिगा सीहम्हा धावन्ति।
५. भूपालो उपासकेहि सद्धिं बुद्धं वन्दति।
६. चोरा गामेहि पब्बते धावन्ति।
७. रजको भूपालाय/भूपालस्स साटके धोवति।
८. धीवरो पिटकेहि कस्सकानं मच्छे आहरति।
९. आचरियो विहारं पविसति, समणे पस्सति।
१०. सप्पो मक्कटं/वानरं डसति।
११. कुमारा ब्राह्मणस्स/ब्राह्मणाय मञ्चं आकड्ढन्ति।
१२. चोरा पुरिसेहि/नरेहि/मनुस्सेहि/सद्धिं/सह पासादं पविसन्ति।
१३. कस्सका धीवरेहि मच्छे लभन्ति।
१४. वराहा दीपम्हा पब्बतं गच्छन्ति।
१५. भूपालो पासादं पजहति, पुत्तो विहारं पविसति।
१६. सीहो सयति, मक्कटा/वानरा कीळन्ति।
१७. आचरियो सुनखम्हा/कुक्कुरम्हा/सोणम्हा पुत्ते रक्खति।
१८. लुद्दका अमच्चानं सरेहि मिगे विज्झन्ति।
१९. दारका मातुलम्हा भत्तं इच्छन्ति।
२०. वेज्जो तापसस्स साटकं ददाति।
२१. वाणिजो आचरियाय/आचरियस्स सकटेन अजं आहरति।
२२. पुत्ता पब्बतम्हा/पब्बतस्मा चन्दं पस्सन्ति।
२३. पण्डिता धम्मम्हा लाभं लभन्ति।
२४. वानरा गामम्हा निक्खमन्ति।
२५. पुत्तो पब्बतस्मा मित्ताय सुकं आहरति।

२६. वेज्जो विहारं पविसति।
२७. सिगालो गामम्हा मग्गेन पब्बतं धावति।
२८. सकटो मग्गम्हा पतति, दारको रोदति।
२९. अमच्चा सोपानं आरुहन्ति, वेज्जो सोपानं ओरुहति।
३०. पण्डिता बुद्धस्मा पञ्हे पुच्छन्ति।

अभ्यास - ६

हिन्दी में अनुवाद

१. किसान का बेटा वैद्य के मित्र के साथ आता है।
२. ब्राह्मण की कुदाली हाथ से गिरती है।
३. मृग गड्ढों से निकलते हैं।
४. व्यापारियों के घोड़े किसान के गाँव की ओर दौड़ते हैं।
५. मामा का मित्र तथागत के श्रावकों की वंदना करता है।
६. मंत्री राजा की तलवार से साँप को मारता है।
७. व्यापारी गाँव में मनुष्यों के लिए टोकरियों से मछलियां लाते हैं।
८. चोर वैद्य की गाड़ी से मित्र के साथ गाँव से निकलता है।
९. उपासक के पुत्र श्रमणों के साथ विहार जाते हैं।
१०. भिखारी मंत्री की धोती चाहता है।
११. मित्रों के मामा तपस्वियों के लिए भात देते हैं।
१२. मछुआरे के आरे से चोर कुत्ते को मारता है।
१३. राजा का पुत्र मंत्री के घोड़े पर चढ़ता है।
१४. पण्डित के पुत्र बुद्ध के शिष्य के साथ विहार में प्रवेश करते हैं।
१५. सूरज मनुष्यों की रक्षा करता है।
१६. वैद्य का कुत्ता आचार्य की सीढ़ी से गिरता है।
१७. धोबी वृक्षों से उतरते हैं।
१८. भिखारी के बच्चे रोते हैं।
१९. शिकारी के बेटे चोर के बच्चों के साथ खेलते हैं।
२०. तपस्वी तथागत के श्रावकों के लिए भात देता है।
२१. श्रमण आचार्य के हाथ से चीवर प्राप्त करते हैं।

२२. चोर व्यापारी के मित्र से घोड़ा माँगता है।
२३. उपासक तथागत के श्रावकों से प्रश्न पूछते हैं।
२४. चट्टान से मृग गिरता है, शिकारी हंसता है, कुत्ते दौड़ते हैं।
२५. वैद्य का पात्र पुत्र के हाथ से गिरता है।
२६. लड़का मामाओं के पुत्रों को अपने हाथ से भात देता है।
२७. वाण शिकारी के हाथों से गिरते हैं, मृग पर्वत की ओर दौड़ते हैं।
२८. राजा का पुत्र मंत्रियों के साथ महल से उतरता है।
२९. वैद्य का कुत्ता किसान के सूअर को काटता है।
३०. मछुआ/धीवर मनुष्यों के लिए मछलियां लाता है, लाभ प्राप्त करता है।

पालि में अनुवाद

१. ब्राह्मणस्स पुत्ता अमच्चस्स पुत्तेन सह नहायन्ति।
२. मातुलस्स मित्तो कस्सकस्स पुत्तेन सद्धिं ओदनं पचति।
३. धीवरो भूपालस्स पासादं मच्छे आहरति।
४. भूपालो पासादम्हा अमच्चानं पुत्ते पक्कोसति।
५. वाणिजस्स रथो पब्बतस्मा पतति।
६. भूपालस्स अमच्चा अस्सेहि सह पासादस्मा निक्खमन्ति।
७. ब्राह्मणस्स वेज्जो तापसानं साटके ददाति।
८. लुद्दकस्स सुनखा पब्बतस्मा गामं धावन्ति।
९. वाणिजो वेज्जस्स दारकाय मञ्चं आहरति।
१०. मिगा पब्बतस्मा गामं धावन्ति।
११. आचरियस्स दारको कस्सकस्स रुक्खम्हा पतति।
१२. सुनखो धीवरस्स पिटकस्मा मच्छे खादति।
१३. बुद्धस्स सावका विहारस्मा पब्बतं गच्छन्ति।
१४. लुद्दको अमच्चस्स मित्तानं सरेन सूकरं हनति।
१५. दारको आचरियस्स हत्थेहि दीपं लभति।
१६. वेज्जानं आचरियो दारकस्स मातुलं पक्कोसति।
१७. कुमारो पत्तेन समणाय भत्तं आहरति।
१८. पुरिसा उपासकानं गामं गच्छन्ति।
१९. वराहा/सूकरा सिगालेहि धावन्ति।
२०. मक्कटा/वानरा मिगेहि सद्धिं कीळन्ति।

२१. पण्डितो वाणिजेहि सह भूपालस्स दीपं आगच्छति।
२२. कस्सकस्स दारका मातुलानं रथेहि पब्बतं गच्छन्ति।
२३. साटका वाणिजानं सकटेहि पतन्ति।
२४. समणो भूपालस्स हत्थेहि पत्तं लभति।
२५. रजको पुरिसस्स मातुलाय साटके आहरति।
२६. भूपालस्स अमच्चा आचरियस्स मित्तेहि सद्धिं ओदनं भुञ्जन्ति।
२७. पण्डिता भूपालानं दीपे चोरेहि रक्खन्ति।
२८. कुमारा कस्सकेहि धीवरानं पिटके आहरन्ति।
२९. कस्सकस्स अस्सो वेज्जस्स रथं मग्गम्हा आकड्ढति।
३०. समणा आचरियस्स गामं पविसन्ति।

अभ्यास - ७

हिन्दी में अनुवाद

१. ब्राह्मण मित्र के साथ रथ पर बैठता है।
२. असत्पुरुष चोरों के साथ गाँवों में घूमते हैं।
३. व्यापारी किसान के घर में भात पकाता है।
४. राजा के मंत्री द्वीपों पर मनुष्यों की रक्षा करते हैं।
५. सुगत के श्रावक विहार में रहते हैं।
६. वन्दर वृक्ष से गड्ढे में गिरता है।
७. सूरज का प्रकाश समुद्र पर पड़ता है।
८. किसानों के बैल गाँव में घूमते हैं।
९. वैद्य का लड़का चारपाई पर सोता है।
१०. मछुआरे समुद्र से टोकरियों में मछलियां लाते हैं।
११. शेर चट्टान पर खड़ा है, बन्दर वृक्षों पर घूमते हैं।
१२. राजा का दूत मंत्री के साथ समुद्र पार करता है।
१३. मनुष्य संसार में जीते हैं, देवता स्वर्ग में रहते हैं।
१४. मृग पर्वतों पर दौड़ते हैं, पंछी आकाश में उड़ते हैं।
१५. मंत्री राजा के हाथ से तलवार लेता है।
१६. आचार्य मामा के घर में चारपाई पर पुत्र के साथ बैठता है।

१७. तपस्वी पर्वत पर विहार करते हैं।

१८. उपासक श्रमणों के साथ विहार में एकत्रित होते हैं।

१९. कौए वृक्षों से उड़ते हैं।

२०. बुद्ध धर्म कहते हैं (धर्म का उपदेश करते हैं) सत्पुरुष बुद्ध में प्रसन्न/श्रद्धावान होते हैं।

२१. असत्पुरुष तलवार से नाविक के दूत को मारता है।

२२. मनुष्य बाण से पंछी को बींधता है, पंछी वृक्ष से गड्ढे में गिरता है।

२३. मनुष्य सूरज के प्रकाश में दुनिया देखते हैं।

२४. किसान के बैल मार्ग में सोते हैं।

२५. बैल के शरीर पर कौआ खड़ा है।

२६. मृग द्वीप में चट्टानों पर बैठे हैं।

२७. पंछी नाविक के हाथ से गड्ढे में गिरता है।

२८. सत्पुरुष नाविक के साथ समुद्र से पार उतरता है।

२९. कुदाली शिकारी के हाथ से गड्ढे में गिरती है।

३०. सूरज के प्रकाश से चन्द्र चमकता है।

पालि में अनुवाद

१. सीहो पब्बतस्मिं पासाणे तिट्ठति।

२. चोरा आचरियस्स निवासं पविसन्ति।

३. दारका मित्तेहि सद्धिं मग्गम्हा समुद्दं धावन्ति।

४. मातुलस्स गोणा मग्गे आहिण्डन्ति।

५. सकुणा रुक्खे निसीदन्ति।

६. गोणो पादेन अजं पहरति।

७. सिगाला पब्बते वसन्ति।

८. भूपालो अमच्चेहि सद्धिं बुद्धस्स पादे वन्दति।

९. मातुलो पुत्तेन सह मञ्चे सयति।

१०. धीवरो कस्सकस्स गेहे भत्तं भुञ्जति।

११. भूपालस्स अस्सा दीपस्मिं वसन्ति।

१२. सप्पुरिसो तापसाय/तापसस्स दीपं आहरति।

१३. वेज्जो आचरियस्स गेहं साटकं आहरति।

१४. वानरो/मक्कटो सोणेन सह पासाणस्मिं कीळति।

१५. साटको कस्सकस्स कायस्मिं पतति।
१६. लुद्दको पिटकस्मिं सरे हरति।
१७. बुद्धस्स सावका विहारे सन्निपतन्ति।
१८. रजको अमच्चानं साटके धोवति।
१९. सकुणा आकासे उप्पतन्ति।
२०. सप्पुरिसो नाविकेन सद्धिं समुद्दम्हा उत्तरति।
२१. देवा बुद्धस्स सावकेसु पसीदन्ति।
२२. वाणिजा नाविकेहि सह समुद्दं तरन्ति।
२३. सप्पुरिसो सप्पम्हा कुक्कुरं रक्खति।
२४. काका पब्बतम्हि रुक्खेहि उप्पतन्ति।
२५. वराहो धीवरस्स पिटकस्मा मच्छं आकड्ढति।
२६. सुरियस्स आलोको लोके मनुस्सेसु पतति।
२७. सुरा/देवा आकासेन गच्छन्ति।
२८. दारका कुक्कुरेन सद्धिं मग्गे कीळन्ति।
२९. असप्पुरिसो रुक्खम्हा वानरं आकड्ढति।
३०. भूपालस्स दूतो अस्सम्हा ओरुहति।

अभ्यास - ८

हिन्दी में अनुवाद

१. उपासक फूल लाता है।
२. जंगल में मृग रहते हैं, वृक्षों पर बन्दर विचरण करते हैं।
३. बैल घास खाते हैं।
४. मनुष्य आँखों से देखते हैं।
५. श्रमण विहार में आसन पर बैठते हैं।
६. वृक्ष से पत्तियाँ गिरती हैं।
७. व्यापारी गाँव से दूध शहर ले जाते हैं।
८. राजा कुमार के साथ बगीचे में घूमता है।
९. किसान खेत में कुदाली से गड्ढे खोदता है।
१०. चाचा पुत्र का सामान देता है।

११. उपासक श्रमणों को भिक्षा देते हैं, शील की रक्षा करते हैं/शील का पालन करते हैं।
१२. लड़के मित्रों के साथ पानी में खेलते हैं।
१३. किसान व्यापारियों से वस्त्र प्राप्त करते हैं।
१४. लड़का बगीचे से मामा/चाचा के लिए फूल लाता है।
१५. ब्राह्मण की बकरियाँ बैलों के साथ वन में घूमती हैं, घास खाती हैं।
१६. शेर जंगल में वृक्ष के नीचे बैठता है।
१७. धोबी पानी से आसनों को धोते हैं।
१८. मंत्री दूत के साथ यान से जंगल (में) प्रवेश करते हैं।
१९. भिखारी का पुत्र पानी से पत्ते धोता है।
२०. व्यापारी सामान शहर से गाँव लाते हैं।
२१. तथागत के श्रावक असत्पुरुषों के पुत्रों को अनुशासित करते हैं।
२२. उपासक पानी से फूलों को सींचते हैं।
२३. लड़का पात्र तोड़ता है, मामा/चाचा डांटता है।
२४. शिकारी का पुत्र मृग के शरीर को हाथ से छूता है।
२५. बैल खेत में चट्टान से उठता है।
२६. धोबी का लड़का वस्त्रों को चारपाई पर रखता है।
२७. सुगत का श्रावक विहार का दरवाजा खोलता है।
२८. वैद्य के लड़के घर में नाचते हैं।
२९. पण्डित असत्पुरुष को उपदेश देते हैं।
३०. चोर आचार्य की गाड़ी को पर्वत पर छोड़ देता है।

पालि में अनुवाद

१. दारका कुक्कुरेन सह उदके कीळन्ति।
२. असप्पुरिसो रुक्खस्मा पण्णानि छिन्दति।
३. भूपाला अमच्चेहि सद्धिं रथेहि उय्यानं गच्छन्ति।
४. वाणिजा भण्डानि आदाय नगरम्हा निक्खमन्ति।
५. सप्पुरिसा भिक्खूनं समणानं दानं ददन्ति।
६. बुद्धस्स सावका उपासकेहि सद्धिं/सह उय्याने सन्निपतन्ति।
७. चोरो वनस्मिं रुक्खम्हा ओरूहति।
८. असप्पुरिसा रुक्खेसु मक्कटे पासाणेहि पहरन्ति।

९. वेज्जस्स अस्सो गोणेन सह मग्गे तिणं खादति।
१०. सिगाला अरञ्ञेसु वसन्ति, सुनखा गामेसु वसन्ति।
११. ब्राह्मणा पण्डितस्स गेहे आसनेसु निसीदन्ति।
१२. नाविको गेहस्स द्वारानि विवरति।
१३. धीवरानं पुत्ता मित्तेहि सद्धिं उय्याने नच्चन्ति।
१४. वाणिजो पिटकेसु मच्छे पक्खिपति।
१५. लोको सुरियम्हा आलोकं लभति।
१६. नाविका आसनेहि उट्ठहन्ति।
१७. वेज्जस्स मित्तो कुक्कुरस्स कायं पादेन फुसति।
१८. बुद्धो विहारस्मिं सावके अनुसासति।
१९. कुमारा उय्याना पुप्फानि संहरन्ति/समन्नाहरन्ति उपासका उदकेन आसिञ्चन्ति।
२०. सुको नाविकस्स गेहस्मा/गेहम्हा आकासं उप्पतति।
२१. चोरो ककचेन रुक्खं छिन्दति, कस्सको अक्कोसति।
२२. पण्डितो वाणिजं ओवदति/अनुसासति, वाणिजो पण्डितम्हि पसीदति।
२३. भूपालस्स दूतो नाविकेन सद्धिं समुद्दम्हा उत्तरति।
२४. वाणिजा नगरम्हा कस्सकानं वत्थानि आहरन्ति।
२५. देवा/सुरा सप्पुरिसे रक्खन्ति, सप्पुरिसा सीलानि रक्खन्ति।
२६. सुरियस्स आलोकेन मनुस्सा नयनेहि रूपानि पस्सन्ति।
२७. रुक्खेहि पण्णानि मग्गे पतन्ति।
२८. उपासका पुप्फासनेसु पुप्फानि पक्खिपन्ति।
२९. अजा खेत्ते आवाटेहि उदकं पिवन्ति।
३०. सीहा रुक्खमूले पासाणम्हा उट्ठहन्ति।

अभ्यास - ९

हिन्दी में अनुवाद

१. उपासक विहार जाकर भिक्षुओं को दान देता है।
२. श्रावक आसन पर बैठकर पैर धोता है।
३. लड़के फूल एकत्रित कर मामा/चाचा को देकर हंसते हैं।
४. भिखारी बगीचे से आकर किसान से भात माँगते हैं।
५. शिकारी हाथ से बाणों को लेकर जंगल में प्रवेश करता है।
६. लड़के कुत्ते के साथ खेलकर समुद्र जाकर नहाते हैं।
७. व्यापारी चट्टान पर खड़ा होकर कुदाली से साँप को मारता है।
८. सत्पुरुष भिखारी के पुत्रों को बुलाकर वस्त्र देते हैं।
९. बच्चा गड्ढे में गिरकर रोता है।
१०. राजा महल से निकलकर मंत्री के साथ बात-चीत करता है।
११. कुत्ता पानी पीकर घर से निकलकर सड़क पर सोता है।
१२. श्रमण राजा के बगीचे में एकत्र होकर धर्म कहते हैं।
१३. पुत्र नहाकर भात खाकर चारपाई पर चढ़कर सोता है।
१४. व्यापारी द्वीप से शहर आकर आचार्य के घर में रहते हैं।
१५. धोबी वस्त्रों को धोकर पुत्र को बुलाता है।
१६. बन्दर वृक्षों से उतरकर बगीचे में घूमते हैं।
१७. मृग जंगल में घूमकर पत्तियां खाते हैं।
१८. लड़का आँख धोकर सूरज को देखता है।
१९. नाविक के मित्र नगर से सामान लेकर गाँव आते हैं।
२०. बच्चा दूध पीकर घर से निकलकर हँसता है।
२१. सत्पुरुष दान देकर शीलों की रक्षा कर स्वर्ग जाते हैं।
२२. सूअर पानी से बाहर आकर गड्ढे में उतरकर सोता है।
२३. तपस्वी तथागत के श्रावक को देख वन्दना करके प्रश्न पूछते हैं।
२४. असत्पुरुष भिखारी का पात्र तोड़कर उसको डांट करके घर जाता है।
२५. पक्षी गाँव में वृक्षों से उड़कर जंगल में उतरते हैं।
२६. पण्डित आसन से उठकर तपस्वी के साथ बात-चीत करता है।

२७. बच्चा घर से निकल मामा को बुलाता है और घर में प्रवेश करता है।
२८. देवता सत्पुरुषों पर प्रसन्न होकर उनकी रक्षा करते हैं।
२९. लड़के के मित्र महल पर चढ़कर आसन पर बैठते हैं।
३०. बैल खेत में घूमकर तथा घास खाकर सोते हैं।

पालि में अनुवाद

१. कस्सको गेहा/गेहम्हा/गेहस्मा निक्खम्म/निक्खमित्वा खेत्तं पविसति।
२. बुद्धो धम्मं देसेत्वा विहारं पविसति।
३. भूपालो बुद्धे/बुद्धम्हि/बुद्धस्मिं पसीदित्वा पासादं पजहित्वा विहारं गच्छति।
४. दारको सोपानम्हा ओरुय्ह हसति।
५. कुमारो पासाणेन सप्पं पहरित्वा गेहं धावति।
६. पुरिसो/मनुस्सो/नरो अरञ्ञं गन्त्वा रुक्खं आरुय्ह फलानि भुञ्जति/खादति।
७. उदकेन वत्थानि धोवित्वा रजको (तानि) गेहं आहरति।
८. सीहो अजं हन्त्वा पासाणस्मिं निसीदित्वा खादति।
९. वेज्जो वाणिजानं भण्डानि पस्सित्वा नगरम्हा निक्खमति।
१०. गेहं भिन्दित्वा चोरा अरञ्ञं धावन्ति।
११. सूकरो खेत्ते आहिण्डित्वा आवाटस्मिं पतति।
१२. धीवरो कस्सकानं समुद्दम्हा मच्छे आहरति।
१३. नगरम्हा भण्डानि आदाय आचरियो गेहं आगच्छति।
१४. पब्बतस्मिं ठत्वा लुद्दको सरेहि सकुणे विज्झति।
१५. उय्याने तिणं खादित्वा गोणा मग्गे सयन्ति।
१६. भूपालो रथम्हा ओरुय्ह कस्सकेहि सद्धिं भासति।
१७. पुरिसो गेहं पहाय विहारं पविसति।
१८. धीवरा वाणिजानं मच्छे दत्वा लाभं लभन्ति।
१९. उपासको समणस्मा पञ्हं पुच्छित्वा आसने निसीदति।
२०. बुद्धस्स सिस्सा/सावका असप्पुरिसे दिस्वा अनुसासन्ति ओवदन्ति,।
२१. ब्राह्मणो दारकं अक्कोसित्वा पहरति।
२२. देवा बुद्धम्हा पञ्हे पुच्छित्वा पसीदन्ति।
२३. कुक्कुरो आचरियस्स पादं डसित्वा गेहं धावति।

२४. मक्कटो/वानरो अजेन सद्धिं/सह मग्गे कीळित्वा रुक्खं आरुहति।
२५. तापसो अरञ्ञम्हा आगम्म सप्पुरिसम्हा वत्थं लभति।
२६. दारको उदकं पिवित्वा पत्तं भिन्दति।
२७. समणा कस्सकानं पुत्ते ओवदित्वा आसनेहि उट्ठहित्वा विहारं गच्छन्ति।
२८. नाविको समुद्दं तरित्वा द्वीपं गच्छति।
२९. दारको मातुले पक्कोसित्वा गेहे नच्चति।
३०. वत्थानि धोवित्वा च नहायित्वा च कस्सको उदकम्हा उत्तरति।

अभ्यास - १०

हिन्दी में अनुवाद

१. लड़के जंगल मे मित्रों के साथ खेलकर भात खाने के लिए घर दौड़ते हैं।
२. मृग घास खाकर पानी पीने के लिए पर्वत से बगीचे (को) आते हैं।
३. व्यापारी का पुत्र सामानों को लाने के लिए यान से नगर जाता है।
४. भिखारी मामा की कुदाली से गड्ढा खोदने की इच्छा करता है।
५. मंत्रीगण राजा को देखने के लिए महल में एकत्र होते हैं।
६. बैल बगीचे में घूमकर किसान के खेत में आते हैं।
७. उपासक श्रमणों को दान देने के लिए विहार में प्रवेश करते हैं।
८. यान से नगर (को) जाने के लिए पुरुष घर से निकलता है।
९. ब्राह्मण वैद्य के साथ नहाने के लिए पानी में उतरते हैं।
१०. चोर मंत्री के घर में प्रवेश करने के लिए बगीचे में घूमता है।
११. शेर पर्वत पर सोकर उठकर मृग को मारने के लिए उतरता है।
१२. धोबी पुत्र को पानी में उतरकर वस्त्रों को धोने के लिए बुलाता है।
१३. तथागत को देखने तथा वंदना करने के लिए उपासक विहार में प्रवेश करता है।
१४. खेत जोतने के लिए किसान कुदाली लेकर घर से निकलता है।
१५. बाणों से मृगों को मारने के लिए शिकारी कुत्तों के साथ जंगल में प्रवेश करते हैं।
१६. मनुष्य गाँव छोड़कर नगर में रहने की इच्छा करते हैं।

१७. पंछियों को देखने के लिए मंत्री लड़कों के साथ पर्वत पर चढ़ते हैं।
१८. पर्वत से एक वृक्ष को नीचे खींचने के लिए व्यापारी के साथ किसान जाता है।
१९. फल खाने के लिए बन्दर वृक्षों पर घूमते हैं।
२०. पंडित सुगत के श्रावकों के साथ बात करने की इच्छा करता है।
२१. व्यापारी समुद्र को पार करके द्वीप पर जाकर वस्त्रों को लाने की इच्छा करते हैं।
२२. फूलों को एकत्र कर पानी से सींचने के लिए उपासक लड़कों को सलाह देता है।
२३. बच्चा बकरी के शरीर को हाथों से स्पर्श करने की इच्छा करता है।
२४. ब्राह्मण के घर में आसन पर बैठने के लिए धोबी के पुत्र इच्छा करते हैं।
२५. पीने के लिए पानी मांगते हुए बच्चा रोता है।

पालि में अनुवाद

१. अजा पण्णानि खादित्वा उदकं पिबितुं उय्याने आहिण्डन्ति।
२. असप्पुरिसो पादेन कुक्कुरं पहरितुं इच्छति।
३. मित्ता कुक्कुरेहि सद्धिं कीळितुं उय्यानं गच्छन्ति।
४. उपासको गेहं आगन्त्वा पुत्ते ओवदितुं इच्छति।
५. सुरो/देवो विहारं गन्त्वा बुद्धेन सद्धिं भासितुं इच्छति।
६. सप्पुरिसो सीलानि रक्खित्वा दानानि दातुं इच्छति।
७. सूकरा अरञ्ञं पविसितुं गामम्हा धावन्ति।
८. कस्सको खेत्ते आवाटे खणितुं वाणिजम्हा कुद्दालं याचति।
९. बुद्धं वन्दितुं उपासका विहारे सन्निपतन्ति।
१०. मातुलो धीवरं पक्कोसितुं गेहम्हा निक्खमति।
११. कस्सका गोणे लभितुं इच्छन्ति, वाणिजा अस्से लभितुं इच्छन्ति।
१२. भूपालो पासादं पजहितुं इच्छति।
१३. मनुस्सा पिटके आदाय दारकानं फलानि समाहरितुं अरञ्ञं गच्छन्ति।
१४. कस्सको गोणानं तिणानि छिन्दितुं अरञ्ञे आहिण्डति।
१५. मनुस्सा पुत्तेहि सद्धिं नगरे गेहेसु वसितुं इच्छन्ति।
१६. पासाणस्मिं ठत्वा दारको रुक्खेसु पुप्फानि पस्सति।

१७. आचरिया/आचरियम्हा साटकं लभित्वा वेज्जो पसीदति।
१८. लुद्दको अरञ्ञम्हा अजं आकड्ढितुं सहायं पक्कोसति।
१९. समुद्दं तरितुं नाविको वाणिजे पक्कोसति।
२०. सप्पुरिसो आसनम्हा उट्ठाय भिक्खुना सद्धिं भासितुं इच्छति।
२१. दारका उदकं ओतरित्वा नहायितुं इच्छन्ति।
२२. अरञ्ञं गन्त्वा मिगे विज्झितुं अमच्चो अस्सं आरुहति।
२३. कुमारो मातुलस्स मित्तानं भत्तं पचितुं इच्छति।
२४. कस्सकानं खेत्ते पविसितुं सिगाला अरञ्ञम्हा निक्खमन्ति।
२५. मनुस्सा सुरियस्स आलोकेन नयनेहि रूपानि पस्सितुं इच्छन्ति।

अभ्यास - ११

हिन्दी में अनुवाद

१. पानी माँगकर रोता हुआ लड़का चारपाई से गिरता है।
२. वस्त्रों को प्राप्त करने की इच्छा करता हुआ व्यापारी बाजार जाता है।
३. उपासक कमलों को (कमल) लेकर विहार जाकर बुद्ध को देखकर प्रसन्न होता है।
४. पंछी चोंच में फल लेकर वृक्ष से उड़ता है।
५. चीवर खोजने वाले श्रमण को आचार्य चीवर देते हैं।
६. जंगल में घूमता हुआ शिकारी दौड़ते हुए मृग को देखकर बाण से मारता है।
७. उद्यान में घूमते हुए लड़के से ब्राह्मण कमल के फूल मांगते हैं।
८. रथ से जाते हुए मंत्रियों के साथ आचार्य हँसते हैं।
९. दान देते हुए, शीलों को पालन करते हुए मनुष्य स्वर्ग में पैदा होते हैं।
१०. धान की इच्छा करने वाले मनुष्य को धन देने के लिए व्यापारी इच्छा करता है।
११. बैलों को मारते हुए, वृक्षों को काटते हुए असतपुरुष धन एकत्र करने के लिए प्रयत्न करते हैं।
१२. विहार पहुँचते हुए बुद्ध, धर्म कहते हुए शिष्यों को देखते हैं।
१३. वृक्ष के नीचे बैठकर गीत (को) गाते हुए लड़के नाचना शुरू करते हैं।

१४. सोना प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करते हुए मनुष्य पर्वत पर गड्ढे खोदते हैं।
१५. पानी पीने की इच्छा करता हुआ शेर पानी ढूँढता हुआ जंगल में घूमता है।
१६. वेतन प्राप्त करने की आशा में मनुष्य धोबी के लिए वस्त्रों को धोता है।
१७. भिक्षुओं से बोलते हुए उपासक सत्य प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करते हैं।
१८. मार्ग में सोये कुत्ते पर पानी छींटकर बच्चा हँसता है।
१९. शील पालन करने वाले सत्पुरुष मनुष्य लोक से मरकर देवलोक में पैदा होते हैं।
२०. धन को एकत्र करने के लिए प्रयत्न करता हुआ व्यापारी समुद्र पार करके द्वीप जाना आरंभ करता है।
२१. बैलों को खोजता, जंगल में घूमता किसान शेर को देखकर डरता है।
२२. वृक्षों पर बैठकर, फल खाते हुए लड़के गाना गाते हैं।
२३. मन प्रसन्न करके, धर्म प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करते लोग स्वर्ग में उत्पन्न होते हैं।
२४. कौआ चोंच से पिटारी से मछली खींचने की इच्छा करता हुआ कुत्ते से डरता है।
२५. खेत जोतकर बीज बोता हुआ किसान धान प्राप्त करने की आशा करता है।
२६. सूरज के प्रकाश में आँखों से रूप देखते हुए मनुष्य संसार में जीते हैं।
२७. वृक्ष के नीचे बैठकर चीवर सीते हुए भिक्षु के साथ उपासक बात करता है।
२८. वृक्ष के नीचे सोते हुए भिखारी के शरीर पर पत्तियाँ गिरती हैं।
२९. व्यापारी को पैसा देकर घोड़ों को प्राप्त करने के लिए मंत्री प्रयत्न करता है।
३०. दूध पीकर हँसता हुआ बच्चा पात्र चारपाई पर फेंकता है।

पालि में अनुवाद

१. वत्थानि धोवन्तो पुरिसो मग्गे गच्छन्तेन कुमारेन सद्धिं भासति।
२. ब्राह्मणो उदकं पिवितुं अरञ्ञम्हा निक्खमन्तं/आगच्छन्तं मिगं पस्सति।
३. उय्याने अजा रुक्खेहि पतन्तानि पण्णानि खादन्ति।
४. असप्पुरिसा मिगे हनन्ते लुद्दके पस्सितुं इच्छन्ति।
५. कस्सको खेत्ते बीजानि खादन्ते सकुणे पस्सति।
६. नगरं पविसन्ता समणा विहारे वसन्तं बुद्धं वन्दितुं इच्छन्ति।
७. सोपाने तिट्ठन्तो दारको रुक्खे निसीदन्ते मक्कटे पस्सति।
८. कुमारा उदके चरन्तानं मच्छानं भत्तं ददन्ति।
९. समुद्दं तरितुं आकङ्खमानो नाविको भूपालम्हा मूलं याचति।
१०. समुद्दस्मिं पतन्तं चन्दस्स आलोकं मनुस्सा लोचनेहि पस्सन्ति।
११. उपासका विहारे वसन्तानं भिक्खूनं चीवरे दातुं उस्सहन्ति।
१२. पुञ्ञं आकङ्खमाना सप्पुरिसा भिक्खूनं दानानि ददन्ति, सीलानि रक्खन्ति।
१३. पुरिसो अरञ्ञे रुक्खेहि पतन्तेसु पण्णेसु आहिण्डति/चलति/चरति।
१४. मातुलो पुप्फानि परियेसन्तस्स दारकस्स पदुमं ददाति।
१५. धीवरो याचकस्स थोकं धञ्ञं दत्वा गेहं पविसति।
१६. अमच्चो खेत्ते कसन्तानं कस्सकानं बीजानि ददाति।
१७. सुनखो (तस्स) कायं फुसन्तस्स पुरिसस्स हत्थं डसितुं उस्सहति।
१८. बुद्धस्स सिस्सा/सावका मग्गे रोदन्तं दारकं पुच्छन्ति।
१९. मातुलस्स मित्तो रुक्खमूले निसीदित्वा गीतानि गायन्ते कुमारे पक्कोसति।
२०. सप्पुरिसा गेहे उपसङ्कमन्तानं भिक्खूनं ओदनं ददन्ति।
२१. सग्गे उपपज्जितुं आकङ्खमाना सप्पुरिसा सीलं रक्खन्ति।
२२. गामं आगच्छन्तं/उपसङ्कमन्तं सिगालं दिस्वा कस्सको पासाणेन तं पहरितुं उस्सहति/वायमति।
२३. सच्चं भासमाना उपासका धम्मं उग्गण्हितुं/अधिगन्तुं उस्सहन्ति।
२४. उदकेन पत्तं धोवित्वा तापसो पानीयं परियेसति।
२५. सीलानि रक्खन्ता पण्डिता सच्चं अधिगन्तुं आरभन्ति।

अभ्यास - १२

हिन्दी में अनुवाद

१. तुम मित्रों के साथ यान द्वारा बाजार से सामान लाते हो।
२. मैं पानी से (अनेक) कमल लाकर व्यापारी को देता हूँ।
३. तुम लोग भिक्षुओं को देने के लिए चीवर ढूंढते हो।
४. हम लोग स्वर्ग में जन्म की इच्छा करते हुए शीलों की रक्षा करते हैं।
५. वे लोग धर्म समझने के लिए प्रयत्न करते हुए श्रमणों को दान देते हैं।
६. वह जंगल में उड़ते हुए पंछियों को देखने के लिए पर्वत पर चढ़ता है।
७. हम लोग सुगत के श्रावकों की वंदना करने के लिए विहार में एकत्र होते हैं।
८. तपस्वी को आते हुए देखकर वह भात लाने के लिए धर में प्रवेश करता है।
९. मैं पानी में उतरकर ब्राह्मण के वस्त्रों को धोता हूँ।
१०. तुम धर का द्वार खोलकर पात्र से पानी लेकर पीते हो।
११. स्वर्ण/सोना खोजते हुए मैं द्वीप पर गड्ढा खोदता हूँ।
१२. फल खाते हुए तुम लोग वृक्षों से उतरते हो।
१३. चट्टान पर खड़े होकर तुम चाँद देखने का प्रयत्न करते हो।
१४. हम लोग मनुष्य लोक से च्युत होकर स्वर्ग में उत्पन्न होने की कामना करते हैं।
१५. तुम लोग जंगल में रहने वाले मृगों को बाणों (बाण) से मारने की इच्छा करते हो।
१६. उद्यान में टहलते हुए हम कुत्तों के साथ खेलते हुए बच्चों को देखते हैं।
१७. तुम वृक्षमूल में बैठकर आचार्य को देने के लिए कपड़ा सीते हो।
१८. हम लोग पुण्य चाहते हुए भिक्षुओं को दान देते हैं।
१९. तुम लोग सत्य को समझना आरंभ करो।
२०. गीत गाते हुए तुम रोते हुए बच्चे की रक्षा करते हो।

२१. हम लोग हँसते हुए लड़कों के साथ बगीचे में नाचते हैं।

२२. पानी पीकर पात्र तोड़कर वह मामा/चाचा से डरता है।

२३. महल पहुँचते हुए श्रमण को देखकर राजा का मन प्रसन्न होता है।

२४. हम लोग जंगल में प्रवेश करके बकरियों के लिए पत्तियों को एकत्र करते हैं।

२५. खेत की रक्षा करता हुआ वह सूअरों को गड्ढा खोदते देखकर (उन्हें) पत्थरों से मारता है।

पालि में अनुवाद

१. अहं कुक्कुरस्स कायं फुसन्तं दारकं पक्कोसामि।

२. मयं विहारस्मिं सन्निपतन्तेहि समणेहि सह भासमाना सच्चं अधिगन्तुं उस्सहाम।

३. उय्याने निसीदन्ता तुम्हे मित्तेहि सह फलानि भुञ्जथ।

४. त्वं आसने निसीदित्वा खीरं पिवसि।

५. अरञ्ञं गन्त्वा चरन्ते मिगे पस्सितुं मयं गेहम्हा निक्खमाम।

६. अहं धम्मं अधिगन्तुं इच्छामि।

७. पब्बतम्हि ठत्वा मयं समुद्दस्मिं पतन्तं चन्दस्स आलोकं पस्साम।

८. अहं कस्सकस्स सकटं मग्गम्हा आकड्ढामि।

९. तुम्हें आसनेसु निसीदथ, अहं गेहम्हा पानीयं आहरामि।

१०. बीजानि खादन्ते सकुणे पस्सन्ता मयं खेत्तेसु आहिण्डाम।

११. अहं वराहे हनन्तं असप्पुरिसं ओवदामि।

१२. गेहं उपसङ्कमन्तं सप्पं दिस्वा/पस्सित्वा त्वं भायसि।

१३. अहं अरञ्ञम्हा निक्खमन्तेहि मनुस्सेहि/निक्खमन्ते मनुस्से पञ्हे पुच्छामि।

१४. रोदन्तं दारकं दिस्वा मयं मग्गे गच्छन्तं वेज्जं पक्कोसाम।

१५. सीलानि रक्खन्तो भिक्खूनं दानं ददन्तो अहं दारकेहि सद्धिं गेहे जीवामि।

१६. पापकम्मेहि भायन्ता सप्पुरिसा सग्गे उप्पज्जन्ति।

१७. लाभं लभितुं आकङ्खमाना मयं नगरम्हा भण्डानि आहराम।

१८. रुक्खमूले ठत्वा मयं उदकेन पुप्फानि आसिञ्चाम।

१९. अहं उदकेन पत्ते धोवित्वा वेज्जस्स ददामि।

२०. सच्चं परियेसमानो अहं गेहं पहाय विहारं पविसामि।
२१. तुम्हे समणे पस्सितुं इच्छन्ता उय्याने सन्निपतथ।
२२. अहं काकस्स तुण्डम्हा पतन्तं फलं पस्सामि।
२३. त्वं समुद्दं तरित्वा दीपम्हा अस्सं आहरसि।
२४. अहं आपणम्हा दीपं आहरितुं गेहम्हा निक्खमामि।
२५. अहं पिटकं आदाय धञ्ञं संहरितुं खेत्तं गच्छामि।

अभ्यास - १३

हिन्दी में अनुवाद

१. बुद्ध विहार में एकत्र होने वाले मनुष्यों को धर्मोपदेश करते हैं।
२. बुद्ध को अर्पित करने के लिए उपासक फूलों को चुनता है।
३. पात्रों को पानी से भरते हुए वे गीत गाते हैं।
४. जंगल में रहने वाले मृगों को कष्ट देकर तुम लोग असत्पुरुष होते हो।
५. हम लोग बाजार जाकर व्यापारियों के साथ बातचीत करके धान बेचते हैं।
६. उड़ते हुए तोते को देखकर तू उसे पकड़ने की इच्छा करता है।
७. पर्वत से उदय होते हुए चाँद को देखने के लिए लड़का घर से दौड़कर बाहर निकलता है।
८. मैं किसानों के साथ खेत में पौधे रोपता हूँ।
९. हम लोग मंत्रियों के साथ विचार-विमर्श करते हुए महल में आसन पर बैठते हैं।
१०. तथागत के श्रावकों को निमंत्रित कर तुम लोग दान देते हो/या दान दो। (अनुज्ञा या पंचमी में)
११. उपासक विहार जाकर दीपक जलाकर धर्म सुनने के लिए बैठते हैं।
१२. शिकारी, सिर को वस्त्र से ढककर बैठता है और पक्षियों को मारने का प्रयत्न करता है।
१३. वन में घूमते हुए मवेशियों को गाँव लाकर वह व्यापारियों के पास बेचता है।

१४. बाजार से सामान खरीदकर तथा गाड़ी से लाकर तू घर में रखता है।
१५. तुम लोग आरे से वृक्षों को काटकर पर्वत से गिराते हो।
१६. धर्म से मनुष्यों को पालते हुए राजा अकुशल कर्म को टालते हैं/अकुशल कर्म से दूर रहते हैं।
१७. सत्य जानने की इच्छा से मैं श्रमणों से (अनेक) प्रश्न पूछता हूँ।
१८. दान देने वाले तथा शील पालन करने वाले सत्पुरुष स्वर्ग लोक जाते हैं।
१९. धान तौलता हुआ किसान बाजार ले जाकर धान बेचने का विचार करता है।
२०. पात्र से पानी पीते हुए दरवाजे पर खड़ा होकर मैं मार्ग देखता हूँ।
२१. बाजार से दूध खरीदने के लिए वह पुत्र को भेजता है।
२२. धर्म सीखने का प्रयत्न करते हुए हम लोग पण्डित के साथ विचार-विमर्श करते हैं।
२३. तुम लोग जो चोरों के साथ घरों को तोड़कर मनुष्यों को पीड़ित करते हो, असत्पुरुष हो।
२४. सोना खोजते हुए, द्वीप से आते हुए मैं व्यापारियों को जानता हूँ।
२५. मैं आचार्य हूँ, तू वैद्य है।
२६. बुद्ध द्वारा उपदिष्ट धर्म को सुनकर तू असत्पुरुष, सत्पुरुष होने की कोशिश करता है।
२७. मैं पंडितों के साथ मन्त्रणा करता हुआ, (धर्म से) द्वीप पर शासन करता हुआ राजा हूँ।
२८. सूअरों को मारते हुए तथा किसानों को पीड़ित करते हुए चोर पापकर्म करते हैं।
२९. शील का पालन करते हुए तथा पुण्य कर्म करते हुए मनुष्य स्वर्ग प्राप्त करने की आशा करते हैं।
३०. अकुशल छोड़कर तथा पाप से दूर रह मनुष्य सत्पुरुष होते हैं।

पालि में अनुवाद

१. त्वं रुक्खेहि फलानि ओचिनित्वा आपणं पेसेसि।
२. धम्मं देसेन्तं बुद्धं सुत्वा अहं पसीदामि।
३. धञ्ञं संहरितुं चिन्तेन्तो अहं कस्सकेन सद्धिं खेत्तं गच्छामि।

४. गीतानि गायन्ता तुम्हे आकासे उड्डेन्ते सकुणे ओलोकेथ।
५. गामस्मिं कस्सके पीळेन्तं असप्पुरिसं अहं ओवदामि।
६. मयं उय्याने रुक्खे रोपेतुं आवाटे खणाम।
७. मयं विहारस्मिं दीपे जालेन्तं मनुस्सं जानाम।
८. नाविकेहि सद्धिं दीपं पापुणितुं तुम्हे समुद्दं तरथ।
९. दीपं पालेन्तो भूपालो जिनाति।
१०. मयं गामे वसन्तेहि भिक्खूहि समणेहि धम्मं उग्गण्हितुं आरभाम।
११. सच्चं परियेसन्तो पण्डितो नगरम्हा नगरं गच्छति।
१२. सयन्तं सोणं पादेन परिवज्जेत्वा कुमारो गेहं धावति।
१३. सग्गे उप्पज्जितुं आकङ्खमाना पण्डिता पापं कातुं भायन्ति।
१४. मनुस्सलोकम्हा चवित्वा असप्पुरिसा नरके उप्पज्जन्ति।
१५. पब्बतम्हा तापसं निमन्तेत्वा भूपालो (तस्स) चीवरं ददाति।
१६. सच्चं उग्गण्हितुं उस्सहन्ता उपासका समणा भवन्ति।
१७. धम्मं देसेन्तं समणं सोतुं आकङ्खमाना उपासका विहारे सन्निपतन्ति।
१८. मयं नयनेहि पस्साम, सोतेहि सुणाम, कायेहि फुसाम।
१९. अहं दीपे पालेन्तो भूपालो होमि/भवामि।
२०. तुम्हे चोरेहि सद्धिं मन्तेन्ता असप्पुरिसा होथ/भवथ।
२१. सप्पुरिसा लोकं आरक्खितुं रुक्खे रोपेतुं आरभन्ति।
२२. धम्मं सुत्वा चोरो पापं परिवज्जेतुं इच्छति।
२३. गामेहि आगच्छन्तानं कस्सकानं विक्किणितुं वाणिजा आपणेसु वत्थानि ठपेन्ति।
२४. मनुस्सलोके गिलानो देवानं दूतो होति।
२५. असप्पुरिसे अनुसासेन्ता सप्पुरिसा लोके वसन्ति।
२६. वेज्जो उदकम्हा पदुमानि ओचिनित्वा धम्मं सोतुं विहारं गच्छति।
२७. चोरो बुद्धं पस्सित्वा पसीदित्वा सरे निक्खिपति।
२८. अकुसलं परिवज्जेतुं इच्छन्तो अहं सीलं रक्खामि।
२९. मयं विहारस्मा आगच्छन्तानं समणानं दानं दातुं ओदनं पचाम।
३०. तुम्हे वाणिजेहि सद्धिं सुवण्णं परियेसमाना दीपम्हा दीपं गच्छथ।

अभ्यास - १४

हिन्दी में अनुवाद

१. वह पर्वत से उदय होते चाँद को देखने के लिए महल पर चढ़ेगा।
२. चोरों से द्वीप की रक्षा करने के लिए राजा मंत्रियों के साथ विचार विमर्श करेगा।
३. मैं समुद्र पार करके द्वीप पहुँचकर सामान बेचूँगा।
४. तुम लोग विहार पहुँचते हुए मार्ग में फूल बेचते मनुष्यों को देखोगे।
५. जो किसान पानी में उतरकर वस्त्र धो रहा है, वह नहाकर घर आएगा।
६. गाँव में रहने वाले तुम नगर जाकर रथ लाओगे।
७. पुण्य करने की इच्छा करते हुए तुम सत्पुरुष लोग बुरे मित्रों को उपदेश दोगे।
८. धर्म सुनने के लिए उद्यान में बैठे उपासकों को मैं पानी दूँगा।
९. हम राजा धर्म से द्वीपों को पालेंगे।
१०. वृक्ष गिराकर फल खाने की इच्छा करने वाले असत्पुरुष को मैं डाँटता हूँ।
११. दान देते हुए, शील पालन करते हुए हम लोग श्रमणों से धर्म सीखेंगे।
१२. दौड़ती गाड़ी से गिरते लड़के को देखकर तू वैद्य को लाता है।
१३. सत्य प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता हुआ तपस्वी तथागत को देखने की इच्छा करता है।
१४. बुद्ध पर श्रद्धावान होकर उपासक देवपुत्र होकर स्वर्गलोक में जन्म लेता है।
१५. उगते सूरज को देखकर ब्राह्मण घर से निकलकर वन्दना करता है।
१६. द्वीप पहुँचने की इच्छा करते हुए हम लोग समुद्र पार करने के लिए नाविक को खोजते हैं।
१७. मंत्री के पास दूत भेजने की इच्छा करने वाला राजा मैं हूँ।
१८. पुण्यकर्म करने वाले व्यापारियों के पास धन है।
१९. गीत गाते हुए तथा नाचते हुए लड़कों को हम लोग देखेंगे।
२०. पाप को दूर रख कुशल (कर्म) करते हुए सत्पुरुषों का (अनेक) देवता सम्मान करेंगे।

२१. सत्य बोलते हुए, असत्पुरुषों को उपदेश करते हुए पंडित लोग उपासक होंगे।

२२. तुम धान से पात्र भरकर आचार्य को दोगे।

२३. वृक्ष के नीचे बैठकर चीवर सीते हुए श्रमणों के पास मैं जाऊँगा।

२४. मैं सोते पुत्र के शरीर को थपथपाते हुए चारपाई पर बैठता हूँ।

२५. बगीचों में वृक्ष रोपने (लगाने) के लिए श्रमण मनुष्यों को उपदेश देते हैं।

पालि में अनुवाद

१. अहं बुद्धम्हा धम्मं उग्गण्हित्वा धम्मेन लोके जीविस्सामि।

२. अहं अमच्चेहि सद्धिं धम्मेन दीपं पालेतुं भूपालं ओवदिस्सामि।

३. आसनम्हि साटकं ठपेत्वा कुमारो नहायितुं उदकं ओतरिस्सति।

४. तुम्हे धम्मं सुत्वा तथागते पसीदिस्सथ।

५. फलानि संहरन्ता अरञ्ञे चरन्ता ते पानीयं पातुं इच्छिस्सन्ति।

६. नगरं उपसङ्कमन्ता कस्सका मग्गे धावन्ते रथे पस्सिस्सन्ति।

७. उदेन्तो सुरियो लोकं ओभासेस्सति।

८. उय्याने रुक्खा चन्दस्स आलोकेन नहायिस्सन्ति।

९. पण्डितम्हा पञ्हे पुच्छन्ते पुत्ते दिस्वा त्वं पसीदिस्ससि।

१०. दारका रुक्खेसु फलानि खादन्ते सुके पस्सितुं इच्छिस्सन्ति।

११. मयं दीपम्हा आगच्छन्ता वेज्जा होम/भवाम, तुम्हे दीपं गच्छन्ता आचरिया होथ/भवथ।

१२. सो मूलं आदाय/गहेत्वा भण्डानि किणितुं आपणं गमिस्सति।

१३. दारको पानीयेन पत्तं पूरेत्वा ओदनं भुञ्जन्तस्स याचकस्स दस्सति।

१४. पुञ्ञं लभितुं आकङ्खन्ता मनुस्सा लोके मनुस्सानं रुक्खे रोपेस्सन्ति।

१५. धनं परियेसन्ता असप्पुरिसा गामेसु धम्मेन जीवन्ते कस्सके पीळेस्सन्ति।

१६. पब्बतेसु रुक्खेसु फलानि होन्ति/भवन्ति।

१७. सप्पुरिसा कुसलकम्मानि करोन्ता समणेहि धम्मं उग्गण्हिस्सन्ति।

१८. पंडिता दीपे पालेन्ते भूपाले अनुसासन्ति।

१९. समुद्दम्हा आगच्छन्तेहि धीवरेहि तुम्हे मच्छे किणिस्सथ।

२०. मयं धम्मं उग्गण्हितुं आकङ्खमाना बुद्धं उपसङ्कमाम।

२१. उय्यानं आगच्छन्तं सिगालं दिस्वा दारका भायिस्सन्ति।
२२. अमच्चेहि सह गामं आगच्छन्तं भूपालं पस्सितुं ते गमिस्सन्ति।
२३. त्वं धम्मेन जीवन्तो सप्पुरिसो होसि।
२४. अहं तुण्डेन फलं ओचिनन्तं सुवं पस्सामि।
२५. मयं सीलं रक्खन्ता सप्पुरिसा भविस्साम।

अभ्यास - १५

हिन्दी में अनुवाद

१. अगर तुम धर्म सुनो, तो निश्चित तुम बुद्ध के शिष्य बनोगे।
२. अगर वे लोग गीत गाना सीखें तो मैं भी सीखूँ।
३. अगर तुम बीज भेजोगे, तो किसान उन्हें खेत में बोयेगा।
४. अगर तुम लोग कमल चुनोगे, तो लड़के उनको बुद्ध को अर्पित करेंगे।
५. अगर तुम दाम/पैसा लोगे तो मैं कपड़ा लूंगा।
६. अगर हम लोग राजा के साथ विचार विमर्श करें, तो मंत्री नहीं आयेंगे।
७. अगर तुम लोग वृक्ष लगाओ तो बच्चे फल खायेंगे।
८. अगर हम लोग सत्पुरुष बन जाएँ तो (हमारे) पुत्र भी सत्पुरुष बन जायेंगे ।
९. अगर राजा धर्म पूर्वक द्वीपों पर शासन करे तो हम लोग राजाओं पर प्रसन्न होंगे।
१०. अगर किसान बैल बेचेगा तो व्यापारी उसे खरीदगा।
११. अगर मनुष्यों को पीड़ा देने वाले असत्पुरुष गाँव आयं तो मैं उनको उपदेश दूंगा।
१२. अगर मंत्री पाप से दूर रहें तो लोग पाप न करें।
१३. अगर तुम लोग पर्वत पर चढ़ो तो घूमते हुए मृगों को, वृक्षों पर विचरते हुए बन्दरों को और उड़ते हुए पंछियों को देखोगे।
१४. अगर तुम पात्र में पानी लाओ तो वह प्यासा पानी पियेगा।
१५. कुशलकर्म करके तुमलोग मनुष्य लोक में जन्म लेने के लिए प्रयत्न करो।

१६. अगर वह वैद्य है तो मैं उसे रोते हुए बच्चे को देखने के लिए ले आऊंगा।
१७. अगर पुत्र पाप करे तो मैं उसे उपदेश दूँ।
१८. अगर मंत्री विद्वान आचार्य को लायं तो हम लोग धर्म सीखेंगे।
१९. अगर मैं हाथ से तोते को छूने का प्रयत्न करूं तो वह घर से उड़ सकता है।
२०. अगर वह वैद्य बुलाने की इच्छा करे तो मैं उसे ले आऊँगा।

२१. पालि में अनुवाद

१. सचे त्वं पुत्तानं करोन्ते पापकम्मानि छादेय्यासि ते चोरा भवेय्युं।
२. सचे तुम्हे सप्पुरिसा भवितुं इच्छेय्याथ पापं परिवज्जेय्याथ।
३. सचे मयं नयनेहि ओलोकेय्याम लोके रूपानि पस्सेय्याम,
सचे मयं चित्तेहि ओलोकेय्याम पुञ्ञं च पापं च पस्सेय्याम।
४. यदि त्वं गीतं गायितुं आरभेय्यासि, दारका नच्चितुं आरभेय्युं।
५. सचे मयं मनुस्सलोकम्हा चवेय्याम मनुस्सलोके उप्पज्जितुं न भायिस्साम।
६. सचे देवा मनुस्सलोके उप्पज्जेय्युं ते पुञ्ञकम्मानि करेय्युं।
७. सचे तुम्हे सच्चं परियेसेय्याथ, विहारे वसन्तं तथागतं उपसङ्कमेय्याथ।
८. सचे त्वं वाणिजं ओवदेय्यासि, सो सप्पुरिसो भविस्सति।
९. यदि अहं समणं पक्कोसेय्यामि, सो धम्मं देसेतुं/गेहं आगमिस्सति।
१०. सचे तुम्हे सप्पुरिसो भवसि, अरञ्ञे आहिण्डन्ते गोणे न मारेस्ससि।
११. यदि तुम्हे खेत्ते कम्मं करेय्याथ, तुम्हे धनं च धञ्ञं च लभेय्याथ।
१२. यदि भूपालो धम्मेन दीपं पालेतुं इच्छेय्य/आकङ्खेय्य सो पण्डितेहि च अमच्चेहि च सद्धिं मन्तेय्य।
१३. सचे त्वं खेत्ते कम्म करिस्ससि, कसन्ते कस्सके पस्सेय्यासि।
१४. अहं मक्कटेन सह उय्याने कीलन्ते कुमारे पस्सामि।
१५. यदि ते गायन्ते सकुणे पस्सितुं इच्छेय्युं ते उय्यानं गच्छेय्युं।
१६. सचे तुम्हे धम्मं सुणेय्याथ धम्मेन जीवितुं सक्किस्सथ।
१७. सचे त्वं पापमित्ते परिवज्जेय्यासि त्वं सप्पुरिसो भविस्ससि।
१८. सचे अमच्चो सप्पुरिसो न होति मयं (तं) न उपसङ्कमेय्याम/उपसङ्कमिस्साम।

१९. सचे रुक्खे फलानि होन्ति अहं तानि ओचिनितुं आरुहिस्सामि।
२०. सचे अहं फलानि ओचिनेय्यामि तुम्हे मित्तेहि सह भुञ्जिस्सथ।

अभ्यास - १६

हिन्दी में अनुवाद

१. राजा धर्म से द्वीप पर शासन करे।
२. मनुष्य डरे नहीं, अगर वह सच को जानता है तो बोले।
३. पाप करते हुए पुत्रों को तुम लोग उपदेश दो।
४. सुगत धर्म का उपदेश दें, श्रावक और उपासक विहार में बैठे हैं।
५. पापकर्म करके मनुष्यलोक से च्युत होकर वे नरक में न उत्पन्न हों।
६. चोर किसानों के बैलों को न मारे।
७. कुत्ते को स्पर्श मत करो, वह तुमको काट सकता है।
८. तुम लोग दीपों को जलाकर विहार में भित्ति-चित्रों को देखो।
९. असत्पुरुषों को संबोधित कर उन्हें धर्म से जीने के लिए तुम लोग उपदेश करो।
१०. पुत्र, तुम पापी मित्रों के पास मत जाओ।
११. अगर तुम लोग सत्य बोलने का प्रयत्न करो तो तुम लोग सत्पुरुष हो जाओगे।
१२. अगर तुम पत्थर फेंकोगे तो कौए और पंछी आकाश में उड़ जायेंगे।
१३. बच्चा, पानी पीकर पात्र मत तोड़ो।
१४. सोना चुराकर जाते हुए चोर समुद्र पार न करें।
१५. उपासक, पुत्रों को मत डांटो, श्रमणों के साथ विचार-विमर्श करके उन्हें (पुत्रों को) अनुशासित करो।

पालि में अनुवाद

१. दीपं पालेन्तो भूपालो धम्मेन मनुस्से रक्खतु।
२. उय्याने कीळन्ता दारका पतन्तानि पण्णानि संहरन्तु।
३. कस्सका च वाणिजा च भूपालस्स उय्याने सन्निपतन्तु।
४. सीहे च मिगे च सकुणे च पस्सितुं पुत्ता पब्बतं आरुहन्तु।
५. सचे तुम्हे मिगे आरक्खितुं इच्छथ मा अरञ्ञेसु रुक्खे छिन्दथ।

६. मा दारको सोपानम्हा ओरुहतु, सो पतिस्सति।
७. कस्सको खेत्ते कसित्वा बीजानि वपतु, मा सो अजे हनतु।
८. तुण्डेहि फलानि गहेत्वा सुवा उप्पतन्तु/उड्डेन्तु।
९. पुत्ता, पापानि मा करोथ, धम्मेन जीवथ ।
१०. सुगतस्स सावका दानानि च चीवरानि च लभन्तु।
११. दारका गेहम्हा निक्खमित्वा पब्बतस्मा उदेन्तं चन्दं पस्सन्तु।
१२. कुमारा, मा तुम्हे लुद्दकेन सद्धिं गन्त्वा अरञ्ञे मिगे हनथ/मारेथ।
१३. तुम्हे गेहं धावित्वा खेत्तं कसन्तानं कस्सकानं पानीयं आहरथ।
१४. मा भूपालस्स दूतम्हा पञ्हे पुच्छथ।
१५. तुम्हे, उपासका, अकुसलं परिवज्जेत्वा कुसलकम्मानि कातुं उस्सहथ।

अभ्यास - १७

हिन्दी में अनुवाद

१. किसान खेत जोतकर नहाने के लिए पानी में उतरा।
२. पढ़ने वाले बच्चों को देने के लिए आचार्यों ने फूल लाये।
३. आसनों से उठकर उपासकों ने धर्मोपदेश के लिए आने वाले श्रमण की वंदना की।
४. नगरों में काम करके वेतन प्राप्त करने की आशा करने वाले मनुष्य गाँवों से निकले।
५. आचार्य ने आसन को वस्त्र से ढककर श्रमण को बैठने के लिए निमंत्रित किया।
६. लड़का द्वार खोलकर वृक्ष से उतरते हुए बन्दरों को देखता हुआ खड़ा रहा।
७. पंडित ने बैल चुराकर अकुशल कर्म करने वाले मनुष्यों को बुलाकर उपदेश दिया।
८. भिखारी के पुत्रों ने वृक्षों से गिरते फलों को एकत्र करके बाजार में बेचा।
९. किसान ने धान मापकर व्यापारी के पास बेचने के लिए भेजा।

१०. धर्म सीखने तथा श्रमण बनने की इच्छा करने वाले मंत्री आचार्य को खोजते हुए बुद्ध के पास पहुँचे।
११. अगर तुम लोग गाँव पहुँचोगे तो मित्रों को देखोगे।
१२. पंडित से प्रश्न पूछकर सत्य जानने के लिए मामा ने प्रयत्न किया।
१३. चट्टान पर खड़ा होकर बकरी खाते हुए शेर को देखकर बन्दर डर गये।
१४. वृक्ष के नीचे बैठकर गीत गाते हुए लड़कों की देह पर पत्तियां और फूल गिरे।
१५. धन एकत्र करते हुए तुम लोग समुद्र पार कर द्वीप पर मत जाओ।
१६. दूकान में सामान बेचने वाले व्यापारी की सवारी है।
१७. पुत्र को देने के लिए वस्त्र सीते हुए मैंने गीत गाया।
१८. सूअर और कुत्तों ने खेत में गड्ढे खोदे।
१९. मनुष्यों ने वृक्ष के नीचे बैठकर तपस्वी का भाषण (उपदेश) सुना।
२०. शिकारी के साथ जंगल में घूमते हुए पुत्रों को बुलाकर किसानों ने डाँटा।
२१. तुम सुवर्णपात्र को बेचकर तलवार मत खरीदो।
२२. उसने घर का सामान खेत और मवेशी (अपने) पुत्रों को देकर घर छोड़कर श्रमण होने के लिए सोचा।
२३. धर्म से जीवन जीते हुए सत्पुरुषों ने मृगों को नहीं मारा।
२४. मैं सीढ़ी पर चढ़ा, वे लोग सीढ़ी से उतरे।
२५. मित्रों ने पानी में उतरकर नहाते हुए कमल तोड़े।

पालि में अनुवाद

१. दारको उदकेन पदुमानि आसिञ्चित्वा तेहि बुद्धं पूजेसि।
२. पुरिसा वेतनं लभित्वा आपणं गन्त्वा भण्डानि किणिंसु।
३. धीवरा समुद्दम्हा मच्छे आहरित्वा कस्सकानं विक्किणिंसु।
४. सचे त्वं नहायितुं गच्छसि दारकानं वत्थानि धोवाहि।
५. सुवा च काका च रुक्खेहि आकासं उड्डेसुं ।
६. रुक्खमूले कुक्कुरेन सह कीळन्ते दारके मा अक्कोसथ।
७. भूपालं पस्सितुं सन्निपतित्वा उय्याने निसीदन्तानं मनुस्सानं अहं कथेसिं।
८. गेहं पविसन्तं सप्पं दिस्वा मयं भायिम्ह।

९. मित्तेन सह भत्तं भुञ्जन्तस्स पुत्तस्स अहं पानीयं अदासिं।

१०. मा पापानि करोथ मनुस्सलोकम्हा चवित्वा सग्गं पविसितुं कुसलानि करोथ।

अभ्यास - १८

हिन्दी में अनुवाद

१. अगर सभा में लड़कियाँ बोलेंगी तो मैं भी बोलूंगा।

२. लड़कियों ने फूल चुनकर भवन में बैठकर मालाएँ बनायीं।

३. स्त्री ने वृक्ष की शाखाओं को तोड़कर खींचा।

४. पत्नी ने पेटियों में वस्त्र और सोना रखा।

५. लड़कियाँ महल की छाँव में बैठकर बालू में खेलीं।

६. पत्नी की बात सुनकर प्रसन्न होकर किसान सत्पुरुष बना।

७. पुण्य करते हुए/धर्म से जीते हुए मनुष्यों की देवता रक्षा करें।

८. पर्वत गुफाओं में रहते हुए शेरों ने बालू में खेलते हुए मृगों को मार डाला।

९. माँ ने बच्ची पर क्रोधित होकर हाथ से मारा।

१०. स्त्रियों ने श्रद्धा से भात पकाकर विहार ले जाकर श्रमणों को दिया।

११. तुम लोग शराब मत पीयो, बीमार होने का प्रयत्न न करो।

१२. धर्म से धन एकत्र करते हुए प्रज्ञा से पुत्रों का पोषण करते हुए लोग मनुष्यलोक में सुख अनुभव करते हैं।

१३. अगर तुम लोग नाव से नदी पार करो तो द्वीप पर रहने वाले तपस्वियों को देखकर लौट आने में समर्थ होगे।

१४. महल से निकलते हुए परिषद से घिरे राजा को देखकर स्त्रियाँ आनन्दित होती हैं।

१५. लड़कियों ने भवन में एकत्र होकर लड़कों के साथ वार्तालाप किया।

१६. भूख से पीड़ित बीमार भिखारी को देखकर माँ ने भात दिया।

१७. गुफा में छिपकर शराब पीते हुए चोर शेर को देखकर डर गए।

१८. सूअर को मारकर जीविका उपार्जन करने वाला मनुष्य बीमार होकर दु:ख अनुभव करता है।

१९. व्यापारी की दूकान में पेटी में पैसे हैं।

२०. मनुष्यों को पाप से रोककर श्रमण उन्हें अच्छा बनाने का प्रयत्न करते हैं।

पालि में अनुवाद

१. विहारं गन्तुं अम्माय मग्गं पुच्छन्तो पुरिसो मग्गे अट्ठासि।

२. सद्धाय समणानं ओदनं पटियादेत्वा वनिता विहारं नेसि।

३. त्वं धम्मेन जीवन्तो धनं परियेसितुं सक्कोसि।

४. गेहस्स छायायं निसीदित्वा कञ्ञायो लताय साखायो छिन्दिंसु।

५. असप्पुरिसा सुरं पिबन्ते पुत्ते न ओवदिंसु।

६. दारिका पिटकं च मूलं च आदाय/गहेत्वा धञ्ञं किणितुं आपणं अगच्छि/अगमि।

७. सचे तुम्हे दीपे जालेय्याथ उपासका विहारे रूपानि पस्सेय्युं।

८. सप्पुरिसा! तुम्हे धम्मं उग्गण्हित्वा धम्मेन जीवितुं उस्सहथ।

९. सचे त्वं उस्सहेय्यासि पापं निवारेत्वा पुञ्ञं कातुं सक्कोसि।

१०. वनिता गुहायं सयन्तं सीहं दिस्वा धावि।

अभ्यास - १९

हिन्दी में अनुवाद

१. माँ द्वारा पेटी में रखे हुए सोने को लड़की ने नहीं लिया।

२. धुले हुए वस्त्रों को लेकर पत्नी पानी से बाहर आयी।

३. किसानों द्वारा बगीचे में लगाए गए वृक्षों पर फल लगे थे।

४. बुद्ध देवताओं और मनुष्यों द्वारा पूजित होते हैं।

५. पानी से भरा पात्र लेकर स्त्री घर आयी है।

६. अधर्म से द्वीप पर शासन करते हुए राजा से पीड़ित लोग क्रोधित हैं।

७. पके हुए फल को चोंच में लेकर उड़ते हुए तोते को मैंने देखा।

८. उगते हुए सूरज को ब्राह्मण द्वारा नमस्कार किया गया था।

९. मां द्वारा जलाये गये दीपक को लेकर पुत्र विहार में प्रविष्ट हुआ।

१०. स्त्री द्वारा वस्त्र से ढके आसन पर बैठकर श्रमण ने एकत्रित हुयी सभा को धर्मोपदेश दिया।

११. किसान द्वारा खेत पर लाये गए मवेशी घास चरते हुए इधर-उधर घूमते रहे। ।

१२. व्यापारियों ने पेटियों में रखे हुए कपड़ों को नहीं बेचा।

१३. अगर तू सच को जानता है तो पुत्र को गाली मत दो ।

१४. नाव से यात्रा कर मनुष्य समुद्र पार करके द्वीप पर पहुँचकर पत्नियों के साथ बात करते हुए प्रसन्न होते हैं।

१५. मार्ग में व्यापारी की खड़ी हुई गाड़ी में मैंने लड़की द्वारा लाए हुए सामान को रखा।

१६. धर्म से प्राप्त धन से पुत्रों का पालन-पोषण कर जीते हुए मनुष्य देवताओं द्वारा संरक्षित होते हैं।

१७. श्रावकों और उपासकों से घिरे हुए बुद्ध विहार की छाया में बैठे हुए हैं।

१८. माँ द्वारा अकुशल कर्मों से रोके गए पुत्र सत्पुरुष होकर धर्म सुनते हैं।

१९. किसानों को पीड़ित करने वाले चोर, पंडित से अनुशासित होने पर, सत्पुरुष होने का प्रयत्न करते हुए उपासकों के साथ बगीचे में वृक्ष लगाते हैं।

२०. स्त्री ने पुत्र के लिए तैयार किये हुए भात में से भूख से पीड़ित भिखारी को थोड़ा देकर पानी भी दिया।

२१. सभा में बैठकर बच्ची द्वारा गाये गीत सुनकर लड़कियाँ प्रसन्न हुईं।

२२. मंत्री द्वारा बुलाए गए मनुष्य भवन में बैठने में असमर्थ बगीचे में एकत्र हुए।

२३. किसानों द्वारा खेतों में बोए गए बीजों मे से थोड़े पक्षियों ने खाए।

२४. वृक्ष के नीचे छिपकर सोता हुआ साँप लड़कों द्वारा देखा गया।

२५. व्यापारी द्वारा द्वीप से लाए हुए कपड़े खरीदने की इच्छा स्त्रियाँ करती हैं।

२६. अगर राजा धर्म से मनुष्यों की रक्षा करे, (तो) वे लोग काम करके बच्चों को पोसते हुए सुख अनुभव करें।

२७. माँ ने पुत्र द्वारा याचना किये जाने पर उसके मित्रों के लिए भात पकाया।

२८. मंत्री द्वारा पूछे गए प्रश्न समझने में असमर्थ चोरों के दूत ने सोचना शुरू किया।

२९. चोरों द्वारा गुफा में छिपाए गए सामान देखकर बन्दर उनको लेकर वृक्ष पर चढ़े।

३०. मैं खोजे गये धर्म को प्राप्त/अनुभव कर प्रसन्न हूँ।

पालि में अनुवाद

१. सभं आगतो पुरिसो अमच्चेहि सह कथेतुं न सक्कोसि।

२. अम्माय दिन्नं मूलं आदाय दारको आपणं धावि।

३. भूपालो अस्सेहि आकड्ढिते रथे निसिन्नो होति।

४. कस्सका पण्डितेन सह मन्तेत्वा भूपालस्स सन्तिके दूतं पेसेसुं।

५. दारका विवटम्हा द्वारम्हा निक्खमिंसु।

६. उदकम्हि ओतरित्वा वनितायो वत्थानि धोवित्वा नहायिंसु।

७. बुद्धा च सावका च देवेहि च मनुस्सेहि च पूजिता/वन्दिता होन्ति।

८. वाणिजो वनिताहि सिब्बितानि वत्थानि/दुस्सानि विक्किणि।

९. अहं वनम्हा दारिकाय आहटानि पुप्फानि च फलानि च न गण्हिं।

१०. सोणेन अनुबन्धितायो कञ्ञायो सीधं गेहं धाविंसु।

११. आचरियो दारिकाय कतं पापकम्मं पस्सित्वा (तं) ओवदि।

१२. मयं वनिताहि पटियादिते दीपे न जालयिम्ह।

१३. मा त्वं कस्सकेन छिन्नायो साखायो पब्बतम्हा आकड्ढ।

१४. अस्स कम्मस्स वेतनं अलभित्वा वनिता कुद्धा होति।

१५. साखायं निसिन्नम्हा कुमाराम्हा फलानि मा याच।

१६. ब्राह्मणेन अक्कोसिता वनिता द्वारे निसिन्ना रोदति।

१७. अम्माय पक्कोसिता दारिका भत्तं भुञ्जितुं गेहं धावि।

१८. लतायो छिन्दितुं उस्साहिता नरा/पुरिसा/मनुस्सा साखायो आकड्ढितुं आरभिंसु।

१९. धम्मेन जीवन्तो कस्सको खेत्ते कसन्तो भरियाय च दारकेहि च सद्धिं सुखं विन्दति।

२०. देवलोकम्हा चवित्वा सुरा मनुस्सलोके उप्पज्जित्वा बुद्धेन देसितं धम्मं सुणन्ता मोदन्ति।

२१. समणेन अनुसासिता/ओवदिता चोरा सप्पुरिसा भविंसु।

२२. कस्सकेन रोपितेसु रुक्खेसु फलानि न आसुं/आसिंसु।

२३. सुनखेन डसिता दारिका गेहं धावित्वा रोदि।

२४. अमच्चो वेज्जाय अञ्ञातो होति/वेज्जेन अमच्चो न ञातो होति।
२५. रुक्खमूले निसिन्नायो दारिकायो वालुकाय कीळिंसु।
२६. पुत्ता! मा सुरं पिवथ।
२७. अम्मा/अम्मायो दारके पापा निवारेन्ति।
२८. अहं पिपासेन पीळितस्स कुक्कुरस्स पानीयं अदासिं/अददिं।
२९. मयं आगच्छन्तं/उपसंकमन्तं लुद्दकं दिस्वा रुक्खेसु निलीयिम्ह।
३०. मयं सद्धाय दानानि पटियादेत्वा समणानं ददिम्हा।

अभ्यास - २०

हिन्दी में अनुवाद

१. राजा रानी के साथ नाव से नदी पार करता हुआ पानी में विचरण करती हुई मछलियों को देखता हुआ मंत्रियों के साथ बात करता है।
२. पानी पीकर लड़की द्वारा भूमि पर रखा गया पात्र टूटा हुआ है।
३. किसानों की गायें जंगल में घूमकर खेत में आ गयीं।
४. रात में समुद्र पर गिरी हुई चाँद की किरणों को देखकर तरुणियां आनन्दित हुईं।
५. ऋद्धिबल से आकाश में जाते हुए तपस्वी को देखकर उपासक प्रसन्न होते हैं।
६. बहन के साथ तालाब के तट पर खड़ा होकर उसने कमल एकत्र करने के लिए प्रयत्न किया।
७. स्त्रियों ने तालाब में नहाने की अथवा वस्त्रों को धोने की इच्छा नहीं की।
८. तरुणी द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थ मैंने उसके साथ वार्तालाप करना आरंभ किया।
९. बदमाश बेटे द्वारा किए गए पापकर्म को छिपाने का प्रयत्न माँ ने नहीं किया।
१०. बहन द्वारा वस्त्र में लपेटकर चारपाई पर रखे गये सामान को स्त्री ने पेटी में रखा।
११. तुम लोग सड़क पर सोते कुत्ते को कष्ट न दो।

१२. सत्पुरुष मंत्री ने धन खर्च करके भिखारियों के रहने के लिए भवनों का निर्माण किया और राजा को सूचना दी।

१३. लड़के ने तोते को हाथ से मुक्त किया और उसको उड़ते देख, रोता हुआ वृक्ष के नीचे खड़ा रहा।

१४. श्रद्धा से दान देते हुए कुशल करते हुए सत्पुरुष फिर मनुष्यलोक में उत्पन्न होने की कामना करते हैं।

१५. लड़के ने पेटी खोली, वस्त्र निकाला और माँ को भेजा।

पालि में अनुवाद -

१. भूपालस्स उय्याने पोक्खरणीसु पदुमानि च मच्छा च होन्ति।

२. युवतियो वापिया पदुमानि ओचिनित्वा भूमियं निक्खिपिंसु।

३. राजिनि नावाय/दोणिया नदिं तरित्वा आगताहि भगिनीहि सद्धिं कथेसि।

४. अहं खेत्ते गाविं अनुबन्धन्तं कुक्कुरं अपस्सिं/पस्सिं।

५. इत्थियो च कञ्ञायो च फलानि च पुप्फानि च ओचिनितुं रुक्खे न आरुहिंसु।

६. तुम्हे नहायितुं नदिं गन्त्वा असनिसद्दं च सुत्वा भायित्थ।

७. मा तुम्हे मित्तेहि सह कतं पापं छादेथ।

८. सचे त्वं वत्थानि किणितुं मूलं विस्सज्जेसि अम्माय आरोचेहि।

९. सालायं निसिन्नानं तरुणीनं पदुम-पण्णेहि वेठितानि पदुमानि पेसेहि।

१०. मयं सभायं इत्थीहि पुट्ठे पञ्हे व्याकातुं सक्कोम।

अभ्यास - २१

हिन्दी में अनुवाद

१. खेत से फल चुराती बच्ची ने किसान को देखकर डरकर दौड़ना शुरू किया।

२. बुद्ध के शिष्य द्वारा दिये गये धर्म सुनकर युवती ने सत्य को जानने की इच्छा से माँ के साथ मन्त्रणा की।

३. सोते हुए कुत्ते को थपथपाती हुई लड़की घर के द्वार पर बैठी हुई है।

४. रानी ने नारियों द्वारा पूछे गये प्रश्नों को स्पष्ट करती हुई सभा में बैठकर परिषद को संबोधित कर बात कही।

५. जंगल जाकर वृक्ष काटकर शाखाएँ खींचती हुई स्त्रियाँ गीदड़ देखकर डर गयीं।

६. घर के द्वार पर बैठकर वस्त्र सीती हुई बहन गीत गाती है।

७. असत्पुरुष पापकर्मों को छिपाकर उपासकों के साथ वार्तालाप करता हुआ विहार में आसन पर बैठा हुआ है।

८. वस्त्र में लपेटे छिपाए गये सुवर्ण को देखने की इच्छा करती हुई युवती ने कमरे का द्वार खोला।

९. अगर तुम पैसा खर्च करना चाहते हो, कपड़ा मत खरीदो।

१०. अगर तुम लोग राजा के पास दूत भेजो तो मंत्रियों को भी बताओ।

११. किसान ने काटी गयी शाखाओं को खेत से बाहर निकालकर जंगल में रखा।

१२. तालाब के तट पर खड़ी होकर केला खाती हुई लड़की ने बहन द्वारा दिए गए कमल को ग्रहण किया ।

१३. हमारे हाथ पैर में बीस उँगलियाँ हैं।

१४. रात को घर से निकलने में डरती हुई लड़की ने द्वार नहीं खोला।

१५. अगर तू लाठी से कुत्ते को मारोगे तो वह काटेगा।

१६. हम लोगों ने सत्पुरुष बनने की इच्छा से श्रमणों के पास जाकर धर्म सुनकर कुशल कर्म करना शुरू किया।

१७. पापकर्मों द्वारा पीछा किये गए असत्पुरुष चोर नरक में उत्पन्न होकर दुःख भोगते हैं।

१८. पुण्य का त्यागकर पाप न करो, अगर करोगे तो मनुष्य लोक से च्युत होकर दुःख अनुभव करोगे।

१९. अगर तुम लोग स्वर्ग में उत्पन्न होकर आनन्दित होना चाहते हो, तो पुण्य करो।

२०. सत्य जानने का प्रयत्न करते हुए ब्राह्मणों ने मित्रों के साथ विचार विमर्श किया।

२१. स्त्री द्वारा पिंजरे में रखे गए तोते केले खाते हुए बैठे हुए हैं।

२२. बैल को कष्ट देना न चाहते हुए व्यापारी ने गाड़ी से सामान निकालकर जमीन पर रख किसान को बताया/सूचित किया।

२३. जंगल में रहने वाले मृग, बैल और सूअर शेर से डरते हैं।

२४. श्रद्धा से उपासकों द्वारा दिया गया भोजन खाकर, श्रमण सत्य प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए शीलों की रक्षा करते हैं।

२५. रात को खुली नाव नदी पार करके सुबह द्वीप पर पहुँची।

२६. घर की छाँव में खड़ी होकर लड़की द्वारा जमीन पर रखे गए भात को कुत्ते ने खाना आरंभ किया।

२७. पत्नी द्वारा माप से मापे हुए धान लेकर किसान बाजार गया हुआ है।

२८. उड़ते हुए कौओं को देखकर बालू और पानी से खेलती हुई बच्ची हंसती हुई दौड़ी।

२९. रथ हांकना/चलाना सीखते हुए मनुष्य ने योग्य/दक्ष रथ चालक होने का प्रयत्न किया।

३०. खुले हुए दरवाजे से निकले हुए लड़के पिंजरों से मुक्त पंछियों जैसे बगीचे की ओर दौड़े।

पालि में अनुवाद

१. मञ्चस्मिं/मञ्चे निसिन्ना कञ्ञा/दारिका अम्माय दिन्नं खीरं पिवि।

२. इत्थियो/नारियो/वनितायो घटे गहेत्वा सल्लपन्तियो उदकं आहरितुं नदिं गमिंसु/गच्छिंसु।

३. सकुणं विहेठेतुं न इच्छन्ती नारी (तं) पञ्जरम्हा मुञ्चि।

४. रुक्खम्हा फलानि ओचिनितुं असक्कोन्ती तरुणी/दारिका कस्सकं पक्कोसि।

५. रोदन्तस्स दारकस्स पत्ते खीरं नत्थि।

६. रुक्खमूले गायन्तियो कञ्ञायो नच्चितुं आरभिंसु।

७. लुद्दकेन च सुनखेहि च अनुबद्धा/अनुबन्धिता मिगा वनं धाविंसु।

८. लाभं लभितुं इच्छन्तियो इत्थियो आपणेसु साटके विक्किणिंसु।

९. कुमारो दीपे जालेतुं तेलं किणितुं आपणम्हा आपणं अगमि/अगच्छि।

१०. अहं रुक्खस्स छायाय निसिन्नाय कञ्ञाय मञ्जूसं अददिं/अदासिं।

११. दारिकायो रुक्खम्हा लतं आकड्ढमाना हसिंसु।

१२. इत्थियो च दारके च विहेठेन्ता ते असप्पुरिसा होन्ति।

१३. मयं लोचनेहि भूमियं पतन्तियो सुरियस्स रस्मियो पस्साम।

१४. वनिता गेहं पविसन्तं सप्पं यट्ठिया पहरित्वा मारेसि।

१५. भगिनियो फलानि च पुप्फानि च मञ्जूसासु पक्खिपन्तियो विवटे गेहद्वारे निसीदिंसु।

१६. सचे त्वं उदकम्हा उत्तरित्वा दारकं आरक्खेय्यासि अहं पोक्खरणिं ओतरित्वा नहायिस्सामि।

१७. मयं पापकम्मानि करोन्तीहि इत्थीहि कुज्झित्वा सालाय निक्खमिम्ह।

१८. मा तुम्हे उय्याने आहिण्डन्तियो गावियो च मिगे च विज्झथ, भूपालो च राजिनी च कुज्झिस्सन्ति।

१९. भूपालो च अमच्चा च दीपस्मिं वसन्ते मनुस्से मा विहेठेन्तु।

२०. अहं मग्गे आहिण्डन्तानं खुदाय पीळितानं सुनखानं भत्तं अददिं।

अभ्यास - २२

हिन्दी में अनुवाद

१. उपासकों द्वारा श्रमण वन्दन करने योग्य हैं।

२. पेटी में रखे जानेवाले सुवर्ण को चारपाई पर मत छोड़ो।

३. सत्पुरुष पूजनीयों को पूजते हैं, असत्पुरुष वैसा नहीं करते।

४. राजा द्वारा शासन करने योग्य द्वीप के मंत्री अच्छी तरह से शासन नहीं करते हैं।

५. मनुष्यों को धर्म सीखना चाहिए, और सत्य का साक्षात्कार करना चाहिए।

६. लड़कियों द्वारा लाये गये फूलों को पानी से सींचना चाहिए।

७. चोर द्वारा लिया गया मेरी बहन का धन ढूँढना चाहिए।

८. बगीचे में लगाए गए वृक्ष काटने योग्य नहीं होते।

९. धोने योग्य वस्त्रों को लेकर युवतियाँ हँसती हुई तालाब में उतरीं।

१०. श्रमणों द्वारा उपदेश देने योग्य लड़के विहार नहीं गए।

११. किसान द्वारा जोते जाने योग्य खेत को बेचने के लिए व्यापारी ने प्रयत्न किया।

१२. दूकानों में रखे गए बेचने योग्य सामान को खरीदने की इच्छा उन लोगों ने नहीं की।

१३. माँ खाद्य और भोज्य वस्तुओ को तैयार करके अपने बच्चों को देती है।

१४. मनुष्यों को दान देना चाहिए, शील का पालन करना चाहिए, और (अनेक) पुण्य करना चाहिए।

१५. बैलों को खिलाने योग्य घास किसान ने खेत से लाया।

१६. मृग पीने का पानी खोजते हुए जंगल में घूमे।

१७. लड़की को देने के लिए फल बाजार या खेत से लाने चाहिए।

१८. कहने योग्य या नहीं कहने योग्य को नहीं जानते हुए असत्पुरुष सभा में न बैठे।

१९. तुम राजा लोग मंत्रियों, पंडितों तथा श्रमणों द्वारा अनुशासित करने योग्य होते हो।

२०. उपासक द्वारा पूछे गये प्रश्न का उत्तर पण्डित को देना चाहिए।

२१. राजा के बगीचे में रहने वाले मृग और पक्षी शिकारियों द्वारा मारने योग्य नहीं होते हैं।

२२. कुशल को न जानकर पाप करते हुए लड़कों को नहीं डाँटना चाहिए। उनको श्रमणों पण्डितों और सत्पुरुषों द्वारा अनुशासित किया जाना चाहिए।

२३. असत्पुरुषों को टालना/दूर रखना चाहिए, तुम लोग उनके साथ गाँव में मत घूमो।

२४. शराब नहीं पीनी चाहिए, अगर पीयोगे तो तुम बीमार हो जाओगे।

२५. धर्म से जीवन जीते हुए मनुष्य देवों द्वारा रक्षित होते हैं।

पालि में अनुवाद

१. रत्तियं मनुस्सेहि दीपा जालेतब्बा।

२. वाणिजो कस्सकानं विक्किणितब्बे अस्से आहरिंसु।

३. नयनेहि रूपानि पस्सितब्बानि, जिव्हाय रसानि सायितब्बानि।

४. सुनखो/सोणो यट्ठिहि च पासाणेहि च न पहरितब्बो।

५. दीपे मनुस्सा भूपालेन च तस्स अमच्चेहि च आरक्खितब्बा होन्ति।

६. उय्याने आहिण्डन्तेहि नरेहि पुप्फानि न ओचिनितब्बानि होन्ति।

७. भरियाय सद्धिं कस्सकेन धञ्ञं मिणितब्बं होति।
८. मनुस्सेहि पापं न कातब्बं।
९. गोणानं च अजानं च तिणं च उदकं च दातब्बं।
१०. आचरियस्स भगिनिया परिसा आमन्तेतब्बा।
११. गुहासु सयन्ता सीहा मनुस्सेहि न उपसङ्कमितब्बा।
१२. अम्माय वत्थानि दारिकाय धोवितब्बानि होन्ति।

अभ्यास - २३

हिन्दी में अनुवाद

१. माँ ने श्रमणों द्वारा अपने बदमाश पुत्रों को अनुशासित करवाया।
२. तुम लोग मनुष्यों को कष्ट पहुँचानेवाले चोरों को बुलवाकर उपदेश दो।
३. व्यापारी ने किसान से वृक्षों को कटवाकर गाड़ी से नगर ले जाकर बेचा।
४. श्रमण ने उपासकों को एकत्र करवाकर धर्म उपदेश दिया।
५. मामा ने लड़कों द्वारा फूलों और फलों को तोड़वाया/चुनवाया।
६. लड़की ने कुत्ते को तालाब में उतरवाया/उतारा ।
७. मंत्री व्यापारियों और किसानों को बुलवाकर पूछेंगे।
८. लड़कियों द्वारा लाए गए फूलों को स्त्रियों ने सिंचवाया।
९. पत्नी द्वारा किये जाने वाले/किये जाने योग्य काम को मैं करता हूं।
१०. शिकारी ने मित्र से मृग को बिंधवाकर मरवाया।
११. ब्राह्मण ने आचार्य से अपनी लड़की को धर्म सिखवाया।
१२. मां ने बच्ची को दूध पिलाकर चारपाई पर सुलाया।
१३. व्यापारी घोड़ों पर सामान लदवाकर बेचने के लिए नगर गये।
१४. स्त्री मित्र से वृक्ष की शाखाओं को खिंचवाकर घर ले गयी।
१५. मां ने पुत्र से घर आए हुए श्रमण की वंदना करवायी।
१६. उपासकों ने श्रमणों को आसनों पर बिठवाकर खिलाया/खिलवाया।
१७. बहन टूटे हुए पात्र के टुकड़ों को छू-छूकर रोती हुई घर के दरवाजे पर खड़ी रही।

१८. पानी लाने जाती हुईं स्त्रियाँ वार्तालाप करती हुईं वृक्ष के नीचे गिरे फूलों को देखकर खुश हुईं।

१९. चोंच से फल चुनने का प्रयत्न करते हुए तोते को शिकारी ने बाण से मारा।

२०. सत्पुरुषों द्वारा बनवाये गए बिहारों में श्रमण रहते हैं।

पालि में अनुवाद

१. असप्पुरिसो पुत्तेहि सकुणे विज्झापेति।

२. उपासका समणेन धम्मं देसापेस्सन्ति।

३. वनितायो दारकेहि बुद्धस्स सिस्से वन्दापेन्ति।

४. युवति भगिनिया सभायं कथापेस्सति।

५. कस्सको रुक्खं आवाटे पातेसि।

६. तुम्हे उदकेन पुप्फानि सिञ्चापेस्सथ।

७. भूपालो अमच्चेहि विहारं कारापेसि।

८. राजिनि भूपालेन कारापिते पासादे वसिस्सति।

९. वाणिजो भरियाय भण्डानि मञ्जूसासु निक्खिपापेसि।

१०. ब्राह्मणो बुद्धस्स सावकेन ञातयो देसापेसि।

अभ्यास - २४

हिन्दी में अनुवाद

१. बहू सास की गाय को रस्सी से बाँधकर खेत ले गयी।

२. माँ खिचड़ी पकाकर बच्चों को देकर चारपाई पर बैठी।

३. युवती के हाथों और उँगलियों में दाद है।

४. हम लोगों ने जंगल में घूमती हुई हथिनियों को देखा।

५. स्त्री ने युवती से भात पकवाकर बच्चियों में थोड़ा-थोड़ा बाँटा।

६. तुम लोगों ने विजली के प्रकाश में गुफा में सोते हुए सिंह को देखा।

७. युवती के हाथों में लड़कों द्वारा दी गईं मालाऐं हैं।

८. बहू ने खेत में गड्ढों में गिरे फलों को एकत्र किया।

९. ब्राह्मण ने बुद्ध की धातुओं को विभाजित करके राजाओं को दिया।

१०. बहू ने सास के पैरों की वंदना की।
११. युवती को घर साफ करना चाहिए/घर में झाड़ू लगाना चाहिए।
१२. देवता समस्त विहार को प्रकाशित करते हुए बुद्ध के पास पहुँचे।
१३. जंगलों में रहती हुईं हथिनियाँ शाखाओं को तोड़कर खाती हैं।
१४. मैंने वृक्ष की छाया में बैठी हुईं गायों और बैलों को घास दी।
१५. स्त्री मार्ग में जाती हुई माँ को देखकर रथ से उतरकर उसको प्रणाम कर रथ पर चढ़वाकर घर ले गयी।
१६. बहू घर के द्वार बंद करके नहाने के लिए नदी पहुँचकर युवतियों के साथ वार्तालाप करती हुई नदी के तट पर खड़ी रही।
१७. राजा ने मनुष्यों को कष्ट देनेवाले चोरों का संहार कर द्वीप की रक्षा की।
१८. माँ ने असत्पुरुषों के साथ रहनेवाले पुत्रों को श्रमणों द्वारा उपदेश दिलवाया।
१९. सत्पुरुष द्वारा खरीदकर लाये गये सामानों में कुछ भी छोड़ने योग्य नहीं है।
२०. तुम लोग गाँव में रहनेवाले किसानों को कष्ट मत दो।

पालि में अनुवाद

१. अम्मा मञ्जूसायं ठपितं सुवण्णं गहेत्वा धीतुया अददि/अदासि।
२. वधू मालाहि च फलेहि च देवतायो पूजेसि।
३. सचे त्वं आवाटे खणेय्यासि अहं रुक्खे रोपेस्सामि।
४. तुम्हे खेत्तं गन्त्वा धञ्ञं गेहस्मिं आहरथ।
५. कणेरुयो कदलिरुक्खे खादन्तियो अटवियं आहिण्डिंसु/चरिंसु।
६. अहं दोणिया नदिं तरन्तियो कञ्ञायो ओलोकिं।
७. तरुणियो कासुयं पतितायो साखायो आकड्ढिंसु।
८. सुरियस्स रंशियो लोकं ओभासेन्ति।
९. गीतानि गायन्तियो भगिनियो नहायितुं वापिं गमिंसु/गच्छिंसु।
१०. इत्थी गाविं रज्जुया बन्धित्वा खेत्तं आनेसि।
११. वधू सस्सुया सद्धिं तथागतस्स धातुयो वन्दितुं अनुराधपुरं अगमासि।
१२. सीलं च पञ्ञा च लोके मनुस्सानं चित्तानि ओभासेन्तु।

अभ्यास - २५

हिन्दी में अनुवाद

१. मुनि शील पालते हुए पर्वत पर गुफाओं में रहे।
२. आचार्य के साथ रहता हुआ कवि ऋषि होता है।
३. राजा ने तलवार से शत्रु पर प्रहार करके मारा।
४. पति पत्नी द्वारा तैयार किया गया भोजन का आनन्द उठाकर/खाकर खेत गया।
५. सत्पुरुष गृहपति पत्नी और पुत्रों के साथ घरों में रहते हुए सुख अनुभव करते हैं।
६. खजाना खोजते हुए राजा मित्रों के साथ द्वीप गये।
७. अतिथियों के लिए भात पकाने के लिए स्त्री ने आग जलायी।
८. व्याधि से पीड़ित मनुष्य चारपाई पर सोता है।
९. गृहपति धान की राशि मापते हुए पत्नी के साथ बात करता है।
१०. बच्चियाँ पर्वत से उगते सूरज को देखती हुईं हँसती हैं।
११. राजा की मुट्ठी में मणियां हैं।
१२. शत्रु कवि के कुत्ते को लाठी से मार कर दौड़ा।
१३. कवि ने पति/नेता द्वारा दिए गए मणि को अपने हाथ में लिया।
१४. स्त्रियों ने पतियों के साथ समुद्र जाकर नहाना आरंभ किया।
१५. नेता ने अतिथि का स्वागत खाद्य और भोज्य से किया।
१६. राजा द्वारा किये जाने योग्य कर्मों को नेता नहीं करेंगे।
१७. मुनियों द्वारा खोजने योग्य धर्म को मैं भी सीखने की इच्छा करता हूँ।
१८. मैं दीपक जलाकर पानी से सींचे हुए कमल फूलों से बुद्ध की पूजा करता हूँ।
१९. तुम पर्वत पर रहनेवाले चीतों को देखने के लिए शिकारी के साथ पर्वत पर चढ़ते हो।
२०. रानी परिषद के साथ सभा में बैठी हुई है।
२१. गृहपति प्रश्न पूछने की इच्छा से ऋषि के पास पहुँचे।

२२. गृहपतियों द्वारा पूछे गये प्रश्नों को ऋषि ने स्पष्ट किया।
२३. स्त्री द्वारा धोए गए वस्त्रों को लेने वाले बन्दरों को देखकर लड़कों ने पत्थरों से उनको मारा।
२४. बगीचे में धूमकर घास खाती हुईं गायें, बैल और बकरियाँ जंगल में प्रवेश करके चीता देख डर गईं।
२५. गृहपतियों द्वारा मुनियों और अतिथियों को खिलाया जाना चाहिए।
२६. माँ ने पेटी में सुरक्षित रखी मणियों को छोटी लड़की और बहू को दिया।
२७. अगर तुम लोग राजा के पास पहुँच जाओ तो हम लोग रथ को तैयार करें/कर लें।
२८. गृहपति ने चोर का गला पकड़कर पैर से उसके पेट में मारा।
२९. पक्षियों द्वारा बनाए गए घोसलों को तुम मत उजाड़ो।
३०. गीत गाती हुई युवती ने गाय के पास पहुँचकर दूध दुहना शूरू किया।
३१. बुद्ध की धातुओं की वंदना करने हम लोग विहार गये।
३२. हम लड़कियों ने धर्मशाला साफ करके चटाइयों पर बैठकर धर्म सुना।
३३. हम लोग आँखों से रूप देखते हैं, कानों से शब्द सुनते हैं, जिव्हा से रस चखते हैं।
३४. उन लोगों ने जंगल में धूमती हुई गायों को रस्सियों से बाँधकर खेत पर लाया।
३५. पत्नी ने व्याधि से कष्ट पाते हुए पति के हाथ को छूते हुए उसको सांत्वना दी।
३६. गृहपति अतिथि के साथ वार्तालाप करता हुआ भवन में बैठा है।
३७. मुनि सत्य प्राप्त करके मनुष्यों को धर्म देने के लिए पर्वत से उतरकर गाँव में विहार में रहते है।
३८. रस्सी से बंधी गाय यहाँ-वहाँ घूमने में असमर्थ हो वृक्ष के नीचे घास खाती है।

३९. रानी ने राजा के साथ रथ से जाती हुई बीच रास्ते पर हल चलाते हुए किसानों को देखा।

४०. तुम लोग पाप मत करो, अगर करोगे तो सुख अनुभव नहीं कर पाओगे।

पालि में अनुवाद

१. पतयो भरियानं दीपम्हा मणयो आहरिंसु।

२. व्याधयो लोके वसन्ते मनुस्से पीळेन्ति।

३. इत्थी भूमियं निसीदित्वा नालिया वीहिं मिनि/मिणि।

४. अकुसलं/पापं करोन्ता गहपतयो इसयो न वन्दन्ति।

५. सचे तुम्हे निधिं खणेय्याथ मणयो लभिस्सथ।

६. अहं भरियाय धोवितब्बानि वत्थानि धोविं।

७. मयं अम्माय पटियादितं यागुं पिविम्ह।

८. नगरम्हा आगच्छन्तानं अतिथीनं ओदनं च यागुं च पचितुं त्वं अग्गिं जालेसि।

९. गहपति गेहं पविट्ठं चोरं असिना पहरि।

१०. कञ्ञा रुक्खस्स छायायं ठितानं गावीनं तिणं अदासि/ददि।

११. मक्कटा/कपयो/वानरा रुक्खेसु वसन्ति, सीहा गुहासु सयन्ति, सप्पा भूमियं चरन्ति।

१२. सचे तुम्हे नगरम्हा किणित्वा भण्डानि आनेय्याथ, अहं तानि कस्सकानं विक्किणिस्सामि।

१३. असप्पुरिस! सचे त्वं कुसलं करेय्यासि सुखं विन्देय्यासि।

१४. अम्माय गेहे मञ्जूसासु मणयो च सुवण्णं च सन्ति।

१५. इसि भूमियं निसिन्नाय भूपतिनो परिसाय धम्मं देसेसि।

१६. समणा च इसियो च कवयो च सप्पुरिसेहि पूजिता होन्ति।

१७. मयं अधिपतिना रक्खितं निधिं लभिस्साम।

१८. मा तुम्हे उय्याने रोपितानं रुक्खानं साखायो छिन्दथ।

१९. पञ्जरम्हा मुत्ता सकुणा आकासं उप्पतिंसु।

२०. मयं इद्धिया नदिं तरन्ते इसयो न पस्सिम्ह।

अभ्यास - २६

हिन्दी में अनुवाद

१. गाता हुआ पंछी शाखा पर बैठता है।

२. गाय को रस्सी से मुक्त करती हुई माँ खेत में खड़ी हुई हैं।

३. लड़कियों ने सभा में नाचती हुईं गाया।

४. सेठ (लखपती) ने बहुत धन खर्च करके श्रमणों के लिए विहार बनवाया।

५. हाथी और हथिनियां जंगल में घूमते हैं।

६. पापकारी ने पापों को छिपाकर सत्पुरुष के समान सभा में बैठकर सेठ के साथ बात की।

७. सत्पुरुष दीर्घजीवी हों, पुत्र सुखी रहें।

८. व्यापारी ने शहर से सामान खरीदकर टोकरियों में रखकर, रस्सी से बाँधकर बाजार भेजा।

९. सारथी द्वारा लाए गए रथ में सुतार बैठा हुआ है।

१०. सभी प्राणी दीर्घजीवी नहीं होते हैं।

११. माँ सुतार से घर बनवाकर बेटियों के साथ वहाँ रही।

१२. हम लोगों ने मणियों को वस्त्र में लपेटकर पेटी में रख पत्नियों को भेजा।

१३. मुनि ने पापकारी को बुलवाकर धर्मदेशना कर उपदेश दिया।

१४. बलवान द्वारा राजा को दिए गये हाथी को देखने के लिए तुम लोग एकत्र हुए।

१५. मैंने, श्रेष्ठीने कोढ़ी को बुलवाकर, भोजन दिलवाया।

१६. अगर पर्वत पर मोर रहते हैं तो, उनको देखने के लिए मैं पर्वत पर चढ़ने का प्रयत्न करूंगा।

१७. राजा सत्पुरुष थे, मंत्री पापकारी थे।

१८. बलवान द्वारा बनवाये गए महलों में सेठ के पुत्र नहीं रहे।

१९. सभी प्राणी सुख खोजते हुएब तथा कर्म करते हुए जीते हैं।

२०. पति/स्वामी ने मणियों और स्वर्ण खरीदकर पत्नी को दिया।

२१. गरजते बादल की आवाज सुनकर पर्वत पर मोरों ने नाचना शुरू किया।

२२. बलवान पुरुष पापकारी न हों।

२३. सत्पुरुष कुशल करते हुए, मनुष्यों द्वारा पुण्य करवाते हुए, सुखी होते हैं।

२४. कवि ने तलवार से शत्रु को मारा, कवि को मारने में असमर्थ शत्रु क्रुद्ध हुआ।

२५. बन्दरों ने वृक्षों पर घूमते हुए फूलों को बर्बाद किया।

पालि में अनुवाद

१. पापकारिना लुद्दकेन अनुबन्धिता हत्थिनो अटवियं धाविंसु।

२. कुट्ठी सामिना दिन्ने साटके गण्हि।

३. अटवियं वसन्ता दीपयो गुहासु वसन्तेहि सीहेहि न भायन्ति।

४. गीतं गायन्ता कुमारा सालायं दारिकाहि सद्धिं नच्चिंसु।

५. अम्मायो दारिकाहि सह पुप्फासने पदुमानि पत्थरिंसु।

६. सचे कुमारा सुरं पिवेय्युं कञ्ञायो कुज्झित्वा न गायिस्सन्ति।

७. कस्सको खेत्ते तिणं खादन्तियो गावियो विहेठेन्तस्स पापकारिनो कुज्झि।

८. सेट्ठी वड्ढकिना पुत्तानं पासादं कारेसि।

९. देवतायो धम्मेन दीपं पालेन्तं सप्पुरिसं भूपालं रक्खन्तु।

१०. सब्बे पाणिनो दीघजीविनो, सुखिनो होन्तु/भवन्तु!

अभ्यास - २७

हिन्दी में अनुवाद

१. भिक्षु तथागत के श्रावक/शिष्य होते हैं।

२. रिश्तेदार माँ को देखने के लिए नगर से गाँव आये।

३. चोर वृक्षों को काटने के लिए कुल्हाड़ी लेकर जंगल गया।

४. शेर और चीता जंगल में रहने वाले पशुओं को मारकर खाते हैं।

५. सत्पुरुष लोग समझदार होते हैं।

६. राजा ने मंत्रियों के साथ नदी पार कर शत्रुओं पर आक्रमण कर जीतने का प्रयत्न किया।
७. माँ ने चम्मच से बच्ची को भात खिलाया।
८. हाथी और हथिनियों ने गन्ना तोड़कर खाया।
९. राजा के मंत्रियों ने शत्रुओं की पताकाओं को लाया।
१०. पुल पर बैठे (हुए) रिश्तेदार ने वृक्ष की शाखा को हाथ से खींचा।
११. बगीचे में लगाए हुए बाँसों पर पक्षी बैठकर गाते हैं।
१२. अगर प्रमुख लोग उपकारी और बुद्धिमान हैं तो आम जनता गांव में सुख से रह सकती है।
१३. सर्वज्ञ तथागत धर्म से मनुष्यों को अनुशासित करते हैं।
१४. मात्रज्ञ सत्पुरुष दीर्घजीवी और सुखी होते हैं।
१५. समझदार व्यक्तियों/विज्ञों द्वारा अनुशासित किए गए हम लड़को ने सत्पुरुष बनने का प्रयत्न किया।
१६. हम लोग सूरज के प्रकाश में आकाश में उड़ते पंछियों को देखने में समर्थ होते हैं।
१७. तुम लोग प्रसिद्ध आदमी बनने तथा धर्म से जीने का प्रयत्न करो।
१८. मैं धर्म उपदेश करने वाले भिक्षु को जानता हूँ।
१९. साँप चूहों को खाते हैं और जंगल में दीमक की बाँबियों में रहते हैं।
२०. स्त्री की सास ने बहन को गन्ने और कमल दिए।

पालि में अनुवाद

१. सत्तु सेतुं तरित्वा दीपं पविसि।
२. मा तुम्हे फरसूहि वेळवो छिन्दथ ककचेहि छिन्दथ।
३. भूपतिनो अमच्चा सेतुम्हि च तरुसु च केतवो बन्धिसु।
४. पसवो सुसूनं आखवो खादापेसुं।
५. विञ्ञू पभुनो अभविंसु।
६. भिक्खु दीपं पालेन्तस्स भूपतिनो बन्धु अहोसि।
७. सत्तुना छिन्ना रुक्खा उदधिम्हि पतिंसु।
८. कञ्ञं डसितुं उस्सहन्तं सोणं अम्मा मुट्ठिना पहरि।

९. भूपतयो दीपम्हि वसन्ते समणे च ब्राह्मणे च मनुस्से च पसवो च रक्खन्ति।

१०. अम्माय भगिनी वेळुना आखुं मारेसि।

११. आचरियो दाठिनो सुसूनं उच्छवो पेसेसि।

१२. पति गेहं पविसितुं उस्सहन्तं वानरं दिस्वा द्वारं थकेसि।

अभ्यास - २८

हिन्दी में अनुवाद

१. वृक्ष की छाया में बैठे शास्ता भिक्षुओं को धर्म देते हैं।

२. पुण्य करने वाले लोग भिक्षुओं और तपस्वियों को दान देते हैं।

३. अगर शास्ता धर्म दें (तो) जानने वाले होंगे।

४. राजा द्वीप का विजेता हो।

५. पिता बेटी को लेकर विहार गये और उससे शास्ता की वंदना करवायी।

६. जानने वाले (प्रज्ञावान) संसार में मनुष्यों के नेता हों।

७. भाई ने पिता के साथ मां द्वारा पकाया हुआ यवागु खाया।

८. उसके पति नातियों तथा पोतों के साथ खेलते हुए बन्दर देखकर हँसते हुए खड़े रहे।

९. पुल बनाने वालों ने बांसों को बाँधकर नदी के किनारे पर रखा।

१०. समुद्र पार करके द्वीप पर जाने वाले शत्रु द्वारा मारे गये हैं।

११. पत्नी ने पति के वस्त्रों को धोबी से धुलवाया।

१२. नेता के भाषण को बगीचे में बैठे हुए सुनने वाले गरमी से बेचैन थे।

१३. दान देनेवालों से दिए गए वस्त्र भिखारियों द्वारा नहीं बेचे जाने चाहिए।

१४. रोते हुए नाती पर गुस्सा करके स्त्री ने उसको हाथ से मारा।

१५. विनय सिखानेवाले का उपदेश सुनकर रिश्तेदार सत्पुरुष हुए।

१६. घरों और जंगलों में रहने वाले चूहों को साँप खाते हैं।

१७. नाती मां से यवागु मांगता हुआ जमीन पर गिरकर रोता है।

१८. तुम लोग भाइयों और बहनों पर गुस्सा मत करो।

१९. द्वीप पर जाने वालों को जहाज से समुद्र पार करना चाहिए।
२०. पूर्व के ऋषि मंत्रों के कर्ता तथा मंत्रों के प्रवर्ता (सस्वर पाठ करने वाले) थे।
२१. मात्रज्ञ दाता ने नातियों को थोड़ी-थोड़ी मिठाई दी।
२२. बुद्धिमान नेता मनुष्यों को सत्पुरुष बनाते हुए विनय सिखाने वाले होते हैं।
२३. माँ ने लड़की को उपदेश दे सिर चूमा और बाँह थपथपाकर करके सांत्वना दी।
२४. उदार ब्राह्मण ने भूख से पीड़ित भिखारियों को देखकर बहुत/पर्याप्त भोजन दिलाया।
२५. सारथी द्वारा लाए हुए बाँसों को लेकर सुतार ने भवन का निर्माण किया।

पालि में अनुवाद

१. पिता च माता च भातरा सद्धिं भगिनिं पस्सितुं अगमिंसु।
२. पापकारिनो न सुखिनो दीघजीविनो भविस्सन्ति।
३. भूपति परिसाय सद्धिं जेता होतु/भवतु।
४. मातुया भाता मातुलो होति।
५. भातरानं अरयो तरूसु च वेळूसु च केतवो बन्धिंसु।
६. बड्ढकी/गहकारको नत्तारानं वेळवो अदासि/ददि।
७. भाता कटच्छुना धीतुया ओदनं अदासि/ददि।
८. बुद्धो देवानं च मनुस्सानं च सत्था होति।
९. तुम्हे सच्चं वत्तारो भवथ/होथ।
१०. सप्पुरिसा भत्तारो तेसानं भरियानं देवा (देवतायो) सुरा विय कारुणिका होन्ति।
११. दीपं पालेतुं गुणवन्ता सप्पुरिसा बलिनो अमच्चा भवन्तु!
१२. बलवन्ता भूपतिनो जेतारो अभविंसु/भविंसु।

अभ्यास - २९

हिन्दी में अनुवाद

१. घर में घुसते साँप को देखकर लड़की ने डरकर आँसू बहाते हुए रोना शुरू किया।
२. चीता द्वारा मारी गई गाय की हड्डियां भूमि पर चारों ओर विखरी हुई हैं।
३. नदी के पानी से कपड़े धोते हुए पिता ने नहलाने के लिए पुत्र को बुलाया।
४. तू घी और मधु से मिश्रित कर भात खाओगे।
५. हम लोग दूध से दही प्राप्त करते हैं।
६. भिक्षु दीपक की लौ/लपट को देखता हुआ अनित्य संज्ञा को बढ़ाता हुआ बैठा।
७. पापकारी शिकारी ने धनुष और बाणों लेकर जंगल में प्रवेश किया।
८. शत्रु ने मंत्री की जाँघ पर तलवार से वार करके (उनकी) हड्डियों को तोड़ा।
९. मैं घी में पकाए भात को शहद के साथ खाना नहीं चाहता हूँ ।
१०. नाती ने हाथों और घुटनों के बल चलते हुए भिखारी को देखकर दया कर भोजन और वस्त्र दिलवाया।
११. लकड़ियां एकत्र करती हुई स्त्रियों ने जंगल में घूमती हुईं (गीत) गाये।
१२. पानी में जन्मे हुए कमल पानी से लिप्त नहीं होते हैं।
१३. मनुष्य नाना कर्म करके धन जमा करके पत्नी-पुत्रों का पोषण करने के लिए प्रयत्न करते हैं।
१४. पति ने माता की आँखों में आँसू देखकर पत्नी पर गुस्सा किया।
१५. पिता (अपनी) संपत्ति को पुत्र और नातियों में बाँटकर विहार जाकर प्रव्रजित हुए।
१६. पक्षियों द्वारा खाए गए फलों के बीज वृक्ष के नीचे गिरे हुए हैं।

१७. आचार्य ने शिष्यों को शिल्पकला सिखाते हुए उनपर दया कर धर्म से जीने का उपदेश दिया।

१८. बोधिसत्व श्रमण मार को पराजित कर बुद्ध हुए/बने।

१९. बुद्ध को देखकर धर्म सुनने की इच्छा करते हुए मनुष्य धर्म का आचरण करने का प्रयत्न करते हैं।

२०. अगर सत्पुरुषों की सभी कामनायें पूर्ण हो जायं, तो मनुष्य संसार में सुख प्राप्त करे।

२१. व्याधि से पीड़ित माता ने आसू बहाते हुए लड़की के घर आकर चारपाई पर सोकर यवागु माँगा।

२२. माता पर दया करके लड़की ने शीघ्र यवागु तैयार किया माता का मुँह धुलाया और यवागु पिलाया।

२३. पिता द्वारा पूछे गए प्रश्न को पति ने अच्छी तरह विभाजन करके उपमा के साथ अर्थ स्पष्ट किया।

२४. शिकारी ने जंगल में जमीन पर धान्य विखेरकर मृगों को प्रलोभन देकर मारने का प्रयत्न किया।

२५. धान खाते हुए मृग शिकारी को आते हुए देख वेग से दौड़े।

पालि में अनुवाद

१. सो अटवियं दीपिना हतानं पसूनं अट्ठिनि पस्सि।

२. तुम्हे नदिया वारिना नहायिस्सथ।

३. तरुणिया धीतुया अक्खीसु अस्सूनि सन्ति।

४. कस्सको सप्पिं च दधिं च वाणिजानं विक्किणाति।

५. दीपानं अच्चीनि वातेन नच्चिंसु।

६. सत्तुनो पादेसु दद्दु अत्थि।

७. मधुकरो पुप्फानि न विहेठेन्तो पुप्फेहि मधुं संहरति।

८. अटविया दारूनि आहरन्ती इत्थि नदियं पति।

९. मनुस्सा खेत्तेसु च उय्यानेसु च रुक्खे रोपेत्वा धनं संहरितुं उस्सहन्ति।

१०. भत्ता भरियाय नगरम्हा मणिं आहरि।

अभ्यास - ३०

हिन्दी में अनुवाद

१. बलवान राजाओं से शत्रु पराजित होते हैं।

२. आंखों से प्रकाशमान सूरज की किरणों को देखने में हम लोग समर्थ नहीं होते हैं।

३. भिक्षुओं ने भगवान द्वारा दिए गये धर्म सुनकर स्मृतिमान होने का प्रयत्न किया।

४. शीलवान उपासकों ने भगवान की वंदना कर धर्म सुन स्मृतिमान बनने का प्रयत्न किया।

५. प्रज्ञावानों द्वारा इच्छित प्रार्थित पूरा होगा/सफल होगा।

६. कुलवान (अच्छे कुल) का भाई भगवान के साथ विचार विमर्श करता हुआ जमीन पर फैलायी चटाई पर बैठा था।

७. फलदार वृक्षों पर बैठे पक्षियों ने फल खाकर बीजों को जमीन पर गिराया।

८. हिमालय में बहुत पशु, पक्षी और साँप रहते हैं।

९. शीलवान धर्म सुनकर चक्षुमान होने का प्रयत्न करेंगे।

१०. गुणवान के रिश्तेदार ने शीलवती से प्रश्न पूछा।

११. शील का पालन करने वाली गुणवती युवती ने माता की देखभाल की।

१२. प्रसिद्ध महिला के रिश्तेदार वलवान तथा प्रसिद्ध हुए।

१३. धनवान सत्पुरुष की पत्नी पुण्यवती थी।

१४. शीलवानों के बीच रहते हुए असत्पुरुष भी गुणवान हो जाते हैं।

१५. शीलवती माताएँ पुत्रों को गुणवान बनाने का प्रयत्न करती हैं।

१६. बुद्धिमान पुरुष ने पाप करते पुत्रों को उपदेश देने के लिए प्रज्ञावान भिक्षु को बुलाया।

१७. कुलीन परिवार का नाती शीलवान भिक्षु से धर्म सुन प्रसन्न हो, घर छोड़कर भिक्षुओं में प्रव्रजित हुआ।

१८. प्रसिद्ध तथा बलवान पुरुष शीलवान हों।

१९. धनवान तथा बलवान व्यक्ति क्वचित ही गुणवान होते हैं।

२०. हिमालय से आया हुआ प्रज्ञावान ऋषि शीलवती माता के बगीचे में अतिथि था।

२१. दुर्बल शीलवती स्त्री को देखकर दया करती हुई धनवती ने उसको पाला।

२२. हिमालय पर फलदार वृक्ष नहीं काटे जाने चाहिए।

२३. धर्म जाननेवाले यशवान होने का प्रयत्न नहीं करते।

२४. जिसके बहुत रिश्तेदार हैं वह बलवान होता है, धनवान को बहुत रिश्तेदार होते है।

२५. शीलवती रानी ने गुणवती स्त्रियों के साथ सभा भवन में बैठकर प्रसिद्ध लड़की की बात सुनी।

२६. गुणवान मनुष्य ने वृक्ष से रसदार फल तोड़कर विहार में रहने वाले शीलवान भिक्षुओं में बाँटा।

२७. शक्तिशाली रानी के मंत्रियों ने धर्म से द्वीप पर रहनेवाले मनुष्यों पर शासन किया।

२८. यशवती स्त्रियों की बेटियाँ भी यशवती होंगी।

२९. प्रज्ञावती युवती द्वारा पूछे गए प्रश्न को उत्तर देने में असमर्थ धनवान सभा में बैठा।

३०. प्रकाशमान सूरज मनुष्यों को प्रकाश देता है।

पालि में अनुवाद

१. हिमवति वसन्ता इसयो कदाचि नगरं उपसङ्कमन्ति।

२. सतिमन्ता भिक्खवो पञ्ञवन्तानं उपासकानं धम्मं देसेसुं/देसयिंसु।

३. पुञ्ञवन्तानं मनुस्सानं गुणवन्ता मित्ता च बन्धवो च होन्ति।

४. धनवन्ता वाणिजा भण्डानि विक्किणन्ता गामा गामं गच्छन्ति।

५. गुणवती तरुणी धनवन्तस्स आचरियस्स भरिया अहोसि।

६. पञ्ञवा भिक्खु बलवता पभुना पुट्ठं पञ्हं व्याकरि।

७. गुणवतिया युवतिया हत्थे मालायो सन्ति।

८. धनवन्तो यसवन्ता होन्ति, पञ्ञवन्ता गुणवन्ता होन्ति।

९. मा तुम्हे पञ्ञवन्ते च सीलवन्ते च परिवज्जेथ।

१०. भगवा बलवता भूपतिना पालिते यसवति दीपस्मिं विहरति।

११. सचे सीलवा भिक्खु गामे वसति मनुस्सा गुणवन्ता भविस्सन्ति।
१२. कुलवन्ता नरा गुणवन्ता च पञ्ञवन्ता च भवन्तु।
१३. मनुस्सा धनवन्ते च बलवन्ते च अनुगच्छिस्सन्ति।
१४. यसवा भूपति बलवन्तं च बन्धुमन्तं च अरिं पराजेसि।
१५. चक्खुमन्ता मनुस्सा भानुमन्तं सुरियं पस्सन्ति।

अभ्यास - ३१

हिन्दी में अनुवाद

१. मेरे आचार्य ने मुझे पढ़ाते हुए पुस्तक लिखी।
२. मेरी बहन ने बीमार पिता की सेवा/शुश्रूषा की/देखभाल की।
३. दान देने वालों ने भिक्षुओं को दान देते हुए हमें भी भोजन खिलाया/कराया।
४. तुम्हारी बेटियाँ कहाँ जाएँगी?
५. हमारी बेटियाँ शास्ता को नमस्कार करने वेळुवन जाएँगी।
६. काम करते हुए हमारे दास भी सत्पुरुष होते हैं।
७. हमारे द्वारा किए गए पुण्य और पाप हमारे पीछे-पीछे आते हैं।
८. तुम्हारे द्वारा खरीदे गए सामान को तुम्हारी बेटी ने पेटियों में रखा।
९. कुलीन और अस्पृश्य भी हम भिक्षुओं में प्रव्रजित होते हैं।
१०. हमारे बगीचे मे फलदार वृक्षों पर वर्णवान (सुन्दर) पक्षी विचरण करते हैं।
११. बगीचे में आकर घास खाते मृग हमें देखकर डरकर जंगल की ओर दौड़े।
१२. हमारे पति नाव/जहाज से समुद्र पार करके द्वीप पर पहुँचे।
१३. हमारे राजा शक्तिमान और विजेता होते हैं।
१४. आपके नाती और मेरे भाई मित्र थे/हुए।
१५. तुम्हारे द्वारा लाए गए चीवरों को मेरी माँ ने भिक्षुओं को दिया।
१६. बगीचे में बैठे हुए मैंने तुझे/तुझको नातियों के साथ खेलते हुए देखा।
१७. धान मापता हुआ मैं तुझसे बात करने में समर्थ नहीं।
१८. मैं तुझ पर गुस्सा नहीं करता हूँ, तू मुझ पर गुस्सा करता है।

१९. मेरे धनवान बान्धव/रिश्तेदार बुद्धिमान तथा शिक्षित हैं।
२०. दीपक की छाया में मैं तुम्हारी छाया देख सकता हूं।
२१. हमारे राजाओं ने विजेता होकर महलों पर झंडे फहराये/उठाये।
२२. भाइयों के पुत्रों ने मेरे घर रहते हुए शिल्प (कला) सीखा।
२३. तेरी बेटी भिक्षु के उपदेशों को मानकर (उपदेश में स्थित होकर) अपने पति की दयालु मित्र हुई।
२४. कुशल करते हुए नेता स्वर्ग जाने वाले होंगे।
२५. अगर चोर घर मे प्रवेश करता है तो, माथा फोड़कर उसे मार ही देना चाहिए।
२६. हमारे शत्रुओं के हाथों और पैरों में दाद है।
२७. शीलवान बुद्धिमानों के साथ संसार में मनुष्यों के हित सुख के लिए नाना कर्म करते हैं।
२८. अगर शिशुओं को सिखानेवाला कारुणिक होता है, वे श्रुतवान शिशु गुणवान होंगे।
२९. हम लोग दूध से दही और दही से घी प्राप्त करते हैं।
३०. हम लोग घी और मधु मिलाकर भोजन तैयार करके खाएँगे।

पालि में अनुवाद

१. अम्हाकं पुत्ता च नत्तारो च दीघजीविनो सुखिनो होन्तु।
२. अम्हेहि च तुम्हेहि च तरवो न छिन्दितब्बा होन्ति।
३. तुम्हाकं भूपति मन्तीहि सद्धिं दीपं गन्त्वा अरयो/सत्तवो पराजेसि।
४. अहं तया भूमियं विप्पकिण्णानि बीजानि संहरिं।
५. अम्हाकं विञ्ञू यसवा आचरियो अम्हे धम्मं वाचेसि।
६. तुण्डेन फलं ओचिनन्तो पक्खी तया दिट्ठो।
७. मम नत्ता वेज्जो भवितुं इच्छति।
८. तुम्हे हिमवति पब्बते गुहासु विहरन्ते इसयो पस्सित्थ।
९. अम्हाकं पुत्ता च धीतरो च धनवन्ता च गुणवन्ता च भवन्तु।
१०. मम नत्ता तव सावको भविस्सति।
११. त्वं धनवा च यसवा च होहि/भवाहि!
१२. मधुकरो उदके जाते पदुमे तिट्ठति/ठितो होति।
१३. सद्धावा उपासको कुलवतिया युवतिया पुप्फं अदासि/अददि।

१४. यसवन्तिया तरुणिया हत्थे वण्णवा मणि अत्थि।

१५. भानुमा रवि/सुरियो लोकं ओभासेति।

अभ्यास - ३२

हिन्दी में अनुवाद

१. जिस मां का वह पुत्र है वह भाग्यशालिनी है।

२. जो उस द्वीप पर शासन करता है, वह राजा धार्मिक है।

३. किसको आज नवीन जीवन मार्ग नहीं खोजना चाहिए?

४. अगर तुम असत्पुरुष लोग संसार को दूषित करते हो, (तो) तुम लोग बेटे बेटियों के साथ कहाँ रहोगे?

५. जब भिक्षु एकत्र होकर सभा भवन में चटाइयों पर बैठे तब बुद्ध ने प्रवेश किया।

६. जिस प्रदेश में बुद्ध विहार करते हैं मैं वहाँ जाना चाहता हूँ।

७. जिस गुफा में शेर रहते हैं वहां दूसरे जानवर नहीं जाते हैं।

८. जो धनवान है, उसे शीलवान होना चाहिए।

९. अगर तुम लोग मुझसे प्रश्न पूछोगे, मैं उत्तर देने की कोशिश करूँगा।

१०. जहाँ शीलवान भिक्षु रहते हैं, वहाँ लोग सत्पुरुष होते हैं।

११. कब तुम पत्नी के साथ माँ को देखने जाओगे?

१२. जिनके द्वारा वृक्ष काटे गये उन स्त्रियों को पूछने के लिए किसान आया है।

१३. कैसे तुम लोग समुद्र को पार करने की आशा करते हो?

१४. कहाँ से उन स्त्रियों ने मणियों को लाया?

१५. जिन पेटियों में मैंने स्वर्ण रखा था, उनको चोरों ने चुरा लिया।

१६. जो आज नगर जायगा वह पेड़ों पर पताकाओं को देखेगा।

१७. जिस भिक्षु को आज मैंने यवागु दिया, वह तेरा पुत्र है।

१८. कहाँ से मैं धर्म का ज्ञाता प्रज्ञावान भिक्षु पाऊंगा?

१९. चूंकि वह (पुरुष) भिक्षुओं मे प्रव्रजित हुआ इसलिए वह (स्त्री) भी प्रव्रजित होना चाहती है।

२०. जिसे मैं जानता हूं उसे तुमलोग भी जानते हो।

२१. जिन स्त्रियों का धन वह चाहता है, उनसे उसे प्राप्त करने में समर्थ नहीं होता है।

२२. चूंकि हमारे राजा ने शत्रु को पराजित किया, इसलिए हम लोगों ने पेड़ों पर पताके बाँधे।

२३. कब हमारी कामनाएं पूर्ण होंगी?

२४. वे सब (सभी) सत्पुरुष लोग उनके प्रश्नों का उत्तर देने की कोशिश करते हुए सभा में बैठे हैं।

२५. अगर तू दरवाजा बंद करता/करती है तो मैं प्रवेश नहीं कर सकता हूँ।

२६. हमारे द्वारा किए गए कर्म छाया की तरह हमारे पीछे चलते हैं।

२७. बच्चे माता की रक्षा करते हैं।

२८. मैं पति/स्वामी के साथ घर में रहती हुई प्रमुदित/खुश आनन्दित होती हूँ।

२९. तुम्हारे पुत्र और पुत्रियां समुद्र पार करके सामान बेचकर धन प्राप्त करने की इच्छा करती हैं।

३०. तुम शराब पीते हो, इसलिए वह तुम पर गुस्सा करती है।

पालि में अनुवाद

१. यो सीलवा होति सो अरिं पराजेस्सति।

२. या कञ्ञा सभायं कथेसि, सा मम ञाति न होति।

३. यदा माता गेहं आगमिस्सति तदा धीता मणयो दस्सति।

४. यस्स अहं ओदनं अदासिं सो सुनखो मम भातुनो होति।

५. कस्मा तुम्हे समणे वन्दितुं अज्ज गेहं न आगमित्थ।

६. यानि चीवरानि तुम्हे भिक्खूनं ददित्थ, कुतो तुम्हे तानि लभित्थ?

७. यं सुवण्ण अहं तुम्हं अदासिं तं त्वं कस्स अदासि ?

८. यं त्वं इच्छसि तं भुञ्ज।

९. याव त्वं नदिया नहायसि ताव अहं पासाणम्हि निसीदिस्सामि।

१०. यत्थ विञ्ञातारो विहरन्ति तत्थ वसितुं अहं इच्छामि।

विपश्यना साहित्य

हिंदी

- inml DArA Dm kþlþ -
  (pAc idvsly áAvcn) .... rÉ. 65/-
- áAvcn sArAÕ (iÕivr-áAvcn) .... rÉ. 50/-
- jAg pAvn áArfA .... rÉ. 90/-
- jAg StboD.............................. rÉ. 85/-
- Dm: SAdÕ jlvn kþA SADAr .... rÉ. 45/-
- DArf kþr to Dm .... rÉ. 80/-
- EyA bÂ dEKvAdl T? .... rÉ. 45/-
- mgl jg ghl jlvn m .... rÉ. 50/-
- DýmvAfl sgh (pAil gATAa
  av ˜hdl Snu) .... rÉ. 45/-
- ivpÎynA pgozA ‰mAirkþA .... rÉ. 100/-
- sØlsAr BAg 1
  (dlG av mVÀJm inkþAy)............... rÉ. 95/-
- sØlsAr BAg 2 (syØinkþAy) .... rÉ. 90/-
- sØlsAr BAg 3
  (SgØr av Kuþkþinkþay) .... rÉ. 80/-
- D®y bAbA!................................ rÉ. 58/-
- kþ£yAfim© s¥ynArAyf goy®kþA
  (˜yVEt¥v SAr kþit¥v) .... rÉ. 50/-
- pAtjl yogs©........................... rÉ. 60/-
- SAhuty, pAhuty, Sjilkþrfly
  - zA. Som pkþAÕ jl .... rÉ. 40/-
- rAjDm [kþLC aithAiskþ áAsg] .... rÉ. 45/-
- SA¥m-kþTn BAg-1 .... rÉ. 50/-
- SgØr inkþAy, BAg-1 .... rÉ. 125/-
- kþdly kþArAgh jypru
  ivpÎynA kþA pTm jl iÕivr .... rÉ. 50/-
- ivpÎynA : lokþmt BAg-1 .... rÉ. 65/-
- ivpÎynA : lokþmt BAg-2 .... rÉ. 70/-
- SgpAl rAjv¬ jlvkþ.................. rÉ. 30/-
- mgl hSA áABAt (˜hdl doh) .... rÉ. 120/-
- pT-áAdiÕkþA............................... rÉ. 2/-
- ivpÎynA EyA? .... rÉ. 1/-
- smAx SÕokþ kþ SiBlK................ rÉ. 85/-
- SAcAy ül s¥ynArAyf jl
  goy®kþA kþA sVöðA jlvn-pircy ...... rÉ. 30/-
- S˜hsA ikþs kþh?......................... rÉ. 35/-
- lkþuzkþ Bi¡y............................ rÉ. 10/-
- gÈtm bÂ: jlvn-pircy SÈr iÕöA rÉ. 30/-
- BgvAn bÂ kþl
  sÁýpdAiykþtA-ivhln iÕöA............. rÉ. 15/-
- bÂ-jlvn-icÛAAvll....................... rÉ. 330/-
- BgvAn bÂ kþ
  SgüAvkþþmhAmoŸg£lAn .... rÉ. 45/-
- EyA bÂ nAV‰tkþ T?.................... rÉ. 100/-
- itipxkþ m sýykþ sbÂ, (6 BAgA m)
  भाग-१ रु. ६५/-, भाग-२ रु. ८५/-, भाग-३ रु. ९०/-,
  भाग-४ रु. ७५/-, भाग-५ रु. ८०/-, भाग-६ रु. ८५/-
- mhAmAnv bÂ kþl mhAn iv¬A ivpÎynA kþA
  wdgm SÈr ivkþAs
  (116 ic©A kþA sgh) sij£d .... rÉ. 625/-
- mhAkþ‰sp (DutAgDAiryA m 'Sg') ... rÉ. 40/-
- mhAmAnv bÂ kþl mhAn iv¬A
  ivpÎynA kþA wdgm SÈr ivkþAs ..... rÉ. 145/-
- BgvAn bÂ kþ SgwpAskþ
  SnATipV»zkþ .... rÉ. 50/-
- BgvAn bÂ kþl SgüAivkþA
  ikþsAgotml .... rÉ. 30/-
- icØA ghpit av h¥Tkþ SALvkþ....... rÉ. 35/-
- KiÕyA kþl rAh .... rÉ. 150/-
- ivsAKA imgArmAtA....................... rÉ. 45/-
- mgDrAj siny ibVýbsAr............... rÉ. 55/-
- bÂsh‰snAmAvll (pAil av ihdl) .. rÉ. 35/-
- SAn®d – BgvAn bÂ kþ wp‰TAkþ .. rÉ. 130/-
- jln kþl kþlA.............................. rÉ. 80/-
- prm tp‰vl ül rAm˜sh jl............ rÉ. 55/-
- BgvAn bÂ kþl SgwpAiskþAa KÀujUrA
  av sAmAvtl tTA wHrAn®dmAtA..... rÉ. 25/-
- ivpÎynA pi©kþA sgh BAg - 1....... rÉ. 80/-
- ivpÎynA pi©kþA sgh BAg - 2....... rÉ. 75/-
- SAdÕ dpit nkþulptA av nkþulmAtA rÉ. 25/-
- itkþ-p§An (siöFt ÁprKA)............ rÉ. 35/-
- BgvAn bÂ kþ SgüAvkþ sAirpØ.... rÉ. 65/-
- brmA m ilKl gy™ mrl kþivtAa ...... rÉ. 300/-
- bAihy dArÈcliry av B¡A kþuzlkþsA rÉ. 30/-
- rAhul av r§pAl .... rÉ. 40/-
- puf m®tAifpH av Dýmidÿ A......... rÉ. 30/-
- sof kþoiLivs av sofA................ rÉ. 30/-
- rAhulmAtA (yÕoDrA)..................... rÉ. 35/-
- BgvAn bÂ kþ mhAüAvkþ
  SAyülnAn SnuÂ.......................... rÉ. 35/-
- ivpÎynA pi©kþA sgh BAg - 3....... rÉ. 74/-
- ivpÎynA pi©kþA sgh BAg - 4....... rÉ. 84/-
- KmA av wFplv»fA..................... rÉ. 30/-
- pxAcArA av B¡A kþAiplAnl .... rÉ. 30/-
- ivpÎynA pi©kþA sgh BAg - 5....... rÉ. 80/-
- ivpÎynA pi©kþA sgh BAg - 6....... rÉ. 85/-
- SA¥m-kþTn BAg-2 .... rÉ. 80/-
- mhApjApit gotml .... rÉ. 30/-
- cAr mhØvpf lK: lokþ gru bÂ, dÕ kþl

- bAh¿ sñöA, gfrAÀy kþI sñöA kþs ho!, ...ÕAEyA SAr kþoilyA kþ gft© kþA ivnAÕ EyA hßA?.................................rê.35/-
- mHAivhAirfI mAtAjI....................rê. 80/-
- ivpÎynA pi©kþA sgh BAg - 7.......rê. 100/-
- BgvAn bÂ kþ mhAüAvkþþwpAiI ......rê. 30/-
- Dým-vdnA (pAiI gATAa, ˜hdI SnuAd) ....rê. 50/-
- Dýmpd (sÕoiDt ˜hdI SnuAd siht).........rê. 50/-
- mhAsitp§AnsÙ (smIöA av BAúAnuAd).................rê.65/-
- mhAsitp§AnsÙ (BAúAnuAd) ....rê. 35/-
- pAriBkþ pAiI..............................rê. 85/-
- pAriBkþ pAiI kþI kuJI..................rê. 50/-
- ivÎv ivpÎynA %tp kþA sdÕ (˜hdI, mrAXI, SgJI) ....rê. 15/-
- bÂgufgATAvlI (pAiI) ....rê. 30/
- bÂsh%snAmAvlI (pAiI)...............rê. 15/-
- JAgo logA Jgt rA (rAJ%TAnI dhA) .rê. 45/-
- pirBAúA Drm rI (rAJ%TAnI) ....rê. 10/-
- 5 rAJ%TAnI pÙtkþASA kþA sx........rê. 5/-

मराठी

- Jg»yAcI kþIA............................rê. 75/-
- JAg pAvn áArfA ....rê. 80/-
- áAvcn sArAÕ ....rê. 45/-
- Dm: SAdÕ JIvnAcA SADAr...........rê. 45/-
- JAg StboD..............................rê. 65/-
- inmL DArA DmAcI.......................rê. 45/-
- mhAsitp§AnsÙ (BAúAnuAd) ....rê. 45/-
- mhAsitp§AnsÙ (smIöA) ....rê. 40/-
- mgImy gh%T-JIvn....................rê. 40/-
- BgvAn bÂAcI sAáAdAiykþtA-ivhIn iÕkþvfkþ........rê. 12/-
- bÂ JIvn-icÛAAvlI........................rê. 330/-
- SAndAæyA vAxvr..........................rê. 150/-
- SA¥m-kþTn BAg-1........................rê. 50/-
- SgpAI rAJv¬ JIvkþ..................rê. 20/-
- mhAmAnv bÂAcI mhAn iv¬A ivpÎynA: wgm SAif ivkþAs ....rê. 125/-
- lokþ guÑ bÂ ....rê. 10/-
- Ikþuzkþ Bi¡y............................rê. 12/-
- pmKþ ivpÎynAcAy ül s¥ynArAyfJI goykþA yAcA siöFt JIvn-pircy.....rê. 25/-
- BgvAn bÂAc SgwpAskþ SnATipV»zkþ.............................rê. 45/-
- BgvAn bÂAcI SgwpAiskþA ivsAKA imgArmAtA.......................rê. 35/-
- BgvAn bÂAc SgwpAskþ icØA ghpit v h¥Tkþ SALvkþ...............rê. 30/-
- BgvAn bÂAcI SgüAivkþA ikþsAgotmI rê. 25/-
- Dýmpd (pAiI-mrAXI)....................rê. 45/-
- ivpÎynA kþÕAsAXI?.....................rê. 1/-
- mgDrAJ siny ibVýbsAr...............rê. 50/-
- mhAmAnv bÂAcI mhAn iv¬A ivpÎynA: wgm SAif ivkþAs........................rê. 525/-
- pAriBkþ pAiI..............................rê. 65/-
- pAriBkþ pAIcI kuJI ....rê. 40/-
- BgvAn bÂAc mhAüAvkþþmhAkþ%sp (DuugDAr™t ‘Sg’) ....rê. 35/-
- kþAy bÂ duKvAdI hot? ....rê. 40/-
- BgvAn bÂAcþ SgüAvkþþmhAmoŸg£lAn..rê. 45/-
- D®ybAbA .... rê. 55/-

गुजराती

- áAvcn sArAÕ ....rê. 45/-
- Dm: SAdÕ JIvnno SADAr............rê. 60/-
- mhAsitp§AnsÙ..........................rê. 20/-
- JAg StboD..............................rê. 85/-
- DArf kþr to Dm ....rê. 80/-
- JAg pAvn prfA ....rê. 105/-
- EyA bÂ duKvAdI T?..................rê. 40/-
- ivpÎynA ÕA mAx? (pÙtkþA) ....rê. 02/-
- mgI Jg ghI JIvn m.................rê. 50/-
- inmI DArA Dm kþIþ......................rê. 70/-
- bÂ JIvn-icÛAAvlI.......................rê. 330/-
- lokþ guÑ bÂ ....rê. 15/-
- BgvAn bÂ kþI sAýpdAiykþtA-ivhIn iÕöA.............rê. 10/-
- smAx SÕokþ kþ SiBIK...............rê. 75/-
- KiÕyA kþI rAh ....rê. 175/-

अन्य भाषाओं में

- d SAx SAPþ il˜vg (timL)...........rê. 90/-
- iz%kþos smrlJ (timL)................rê. 55/-
- gisys ÊIo SAPþ Dým (timL).......rê. 55/-
- mgI Jg ghI JIvn m (tIgu)........rê. 55/-
- áAvcn sArAÕ (bgAII)..................rê. 65/-
- Dm: SAdÕ JIvn kþA SADAr (bgAII).rê. 60/-
- mhAsitp§AnsÙ (bgAII) ....rê. 90/-
- áAvcn sArAÕ (mIyAIm)...............rê. 45/-
- inmI DArA Dm kþI (mIyAIm) ....rê. 45/-
- JIn kþA hUr (wd) ....rê. 75/-
- Dm: SAdÕ JIvn kþA SADAr (pJAbI) rê. 50/-
- inmL DArA DmAcI (pJAbI) ....rê. 70/-
- mgI Jg ghI JIvn m (pJAbI) .....rê. 50/-
- ikþsAgotmI (pJAbI).....................rê. 30/-

पालि तिपिटक सेटः

अङ्गुत्तरनिकाय (अजिल्द) (१२ ग्रंथ)	रु. १५००/-
खुद्दकनिकाय – सेट १ (९ ग्रंथ)	रु. ५४००/-
दीघनिकाय अभिनवटीका (रोमन) (भाग १ और २)	रु. १०००/-

English Publications

- Sayagyi U Ba Khin Journal .... Rs. 325/-
- Essence of Tipitaka by U Ko Lay .... Rs. 155/-
- The Art of Living by Bill Hart... Rs. 100/-
- The Discourse Summaries .... Rs. 65/-
- Healing the Healer by Dr. Paul Fleischman............................ Rs. 45/-
- Come People of the World... Rs. 40/-
- Gotama the Buddha: His Life and His Teaching .... Rs. 50/-
- The Gracious Flow of Dharma .... Rs. 55/-
- Discourses on Satipaṭṭhāna Sutta.. Rs. 90/-
- The Wheel of Dhamma Rotates.. Rs. 850/-
- Vipassana : Its Relevance to the Present World...................... Rs. 160/-
- Dharma: Its True Nature .... Rs. 115/-
- Vipassana : Addictions & Health (Seminar 1989).................. Rs. 115/-
- The Importance of Vedanā and Sampajañña........................... Rs. 165/-
- Pagoda Seminar, Oct. 1997... Rs. 80/
- Pagoda Souvenir, Oct. 1997 .... Rs. 50/-
- A Re-appraisal of Patanjali's Yoga- Sutra by S. N. Tandon.... Rs. 96/-
- The Manuals Of Dhamma by Ven. Ledi Sayadaw.................. Rs. 280/-
- Was the Buddha a Pessimist? .... Rs. 65/-
- Psychological Effects of Vipassana on Tihar Jail Inmates....... Rs. 80/-
- Effect of Vipassana Meditation on Quality of Life (Tihar Jail)Rs. 100/-
- For the Benefit of Many.. Rs. 220/-
- Manual of Vipassana Meditation .... Rs. 85/-
- Realising Change... Rs. 160/-
- The Clock of Vipassana Has Struck .... Rs. 150/-
- Meditation Now : Inner Peace through Inner Wisdom........... Rs. 90/-
- S. N. Goenka at the United Nations....................................... Rs. 25/-
- Mahāsatipaṭṭhāna Sutta.. Rs. 70/-
- Pali Primer .... Rs. 95/-
- Key to Pali Primer.. Rs. 55/-
- Guidelines for the Practice of Vipassana .... Rs. 2/-
- Vipassana In Government.. Rs. 1/-
- The Caravan of Dhamma.. Rs. 90/-
- Peace Within Oneself .... Rs. 30/-
- The Global Pagoda Souvenir 29 Oct.2006 (English & Hindi) Rs. 60/-
- The Gem Set In Gold .... Rs. 145/-
- The Buddha's Non-Sectarian Teaching .... Rs. 20/-
- Acharya S. N. Goenka An Introduction................................. Rs. 35/-
- Value Inculcation through Self-Observation .... Rs. 55/-

- Glimpses of the Buddha's Life .... Rs. 330/-
- Pilgrimage to the Sacred Land of Dhamma (Hard Bound) ..... Rs. 750/-
- An Ancient Path .... Rs. 120/-
- Vipassana Meditation and the Scientific World View .... Rs. 30/-
- Path of Joy .... Rs. 200/-
- The Great Buddha's Noble Teachings The Origin & Spread of Vipassana (Small) .... Rs. 195/-
- Vipassana Meditation and Its Relevance to the World (Coffee Table Book) .... Rs. 800/-
- The Great Buddha's Noble Teachings The Origin & Spread of Vipassana (HB) .... Rs. 650/-
- Chronicles Of Dhamma .... Rs. 260/-
- Views on Vipassana .... Rs. 70/-
- Be Happy! (A Life Story of Meditation Teacher S.N.Goenka) .... Rs. 165/-
- Three Important Papers: Defence Against External Invasion, How To Defend The Republic and Why was the Sakyan Republic Destroyed? .... Rs. 40/-
- Vipassana Newsletter Collection Part 1 .... Rs. 95/-
- Vipassana Newsletter Collection Part 2 .... Rs. 120/-
- Vipassana Newsletter Collection Part 3 .... Rs. 115/-
- Buddhaguṇagāthāvalī (in three scripts) .... Rs. 30/-
- Buddhasahassanāmāvalī (in seven scripts) .... Rs. 15/-
- English Pamphlets, Set of 9 .... Rs. 11/-
- Set of 10 Post Card .... Rs. 35/-
- Gotama the Buddha: His Life and His Teaching (French) ..... Rs. 50/-
- Meditation Now: Inner Peace through Inner Wisdom (French) Rs. 80/-
- For the Benefit of Many (French) .... Rs. 195/-
- The Discourse Summaries (French) .... Rs. 105/-
- Discourses on Satipaṭṭhāna Sutta (French) .... Rs. 115/-
- Mahāsatipaṭṭhāna Sutta (French) .... Rs. 100/-
- The Clock of Vipassana Has Struck (French) .... Rs. 210/-
- For the Benefit of Many (Spanish) .... Rs. 190/-
- The Art of Living (Spanish) .... Rs. 130/-
- Path of Joy (German, Italian, Spanish, French) .... Rs. 300/-

संपर्कः विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, जि. नाशिक, महाराष्ट्र. फोन: ०२५५३-२४४९९८, २४४०७६, २४४०८६, २४३७१२, २४३२३८. फैक्स: ०२५५३-२४४१७६. (दक्षिण भारतीय भाषाओं में अनुवादित विपश्यना साहित्य, स्थानीय केंद्रों पर उपलब्ध है)
Email: vri_admin@dhamma.net.in;

विपश्यना विशोधन विन्यास के प्रकाशन अब ऑनलाइन भी खरीदे जा सकते हैं। कृपया देखें www.vridhamma.org

विपश्यना साधना केंद्र

ivÎvBr m ivpÎynA E¢ E¢lh 194 E¢d h ijnm BArt m 89 E¢d h wnm s E¢G kþªA E¢ nAm yhA idy jA rh h¦ qn kþªA pr pAy: hr mAh ds idvsIy SAvAsIy iÕivr SAyoi jt hot h¦ qœCkþ ¯yVEt ikþsI BI kþª s BAvI iÕivr-kþAykþmA kþI jAnkþArI áAAðA kþrkþ, SpnI sivDAnsAr sVÿmilt ho skþt h:þ–

प्रमुख केंद्र = धम्मगिरि, धम्मतपोवनः ivpÎynA ivÎv iv¬ApIX, qgtpd-422403, nAiÕkþ. Pþon: [91] (02553) 244076, 244086, 243712, 243238; PþEs: 02553-244176. Website: www.vridhamma.org, Email: <info@giri.dhamma.org> (kþvl kþAyAly kþ smy STAt sbh 10 bj s sAy 5 bj tkþ).

धम्मपत्तनः a%sl v£z kþ pAs, gorAq KAzI, borIvlI (piòcm) mbq – 400 091 **व्यवस्थापक**, Pþon: (91) (022) 2845-2238, 3374-7501, mobA. 97730-69975, (sbh 11 s sAy 5 bj tk); xil-PþEs: (022) 3374-7531, Email: info@pattana.dhamma.org; Website: www.pattana.dhamma.org

धम्मथलीः ivpÎynA kþª, po.bA. 208, jypr-302001, rAj%TAn, Pþon: [91] 0141-2680220, mobA. 0-96104-01401, 09982049732, PþEs: 2576283. Email: info@thali.dhamma.org

धम्मसिन्धुः kþœC ivpÎynA kþ®ª, gAm- bAzA, tA. mAzvI, ijlA- kþœC 370475. Pþon: (02834) 273303, PþEs: 224488, 288911; Email: info@sindhu.dhamma.org **संपर्कः** üI ÕAh, mobA. 99091-70200.

धम्मखेत्तः ivpÎynA S®trAÏxIy sADnA kþª, mAql %xon nAgAjn sAgr roz, kþsm ngr, vn%TlIprm hdrAbAd-500070, (SAD áAdÕ) Pþon: (040) 24240290, 32460762, Email: info@khetta.dhamma.org

धर्मश्रृंगः npAl ivpÎynA kþª, mhAn poKrI, bZAnIlkþX, po. bA. 12896, kþAXmAz, Pþon: 977 (01) 4371655, 4371007, 4250581, 4225490; Email: info@sringa.dhamma.org;

Myanmar

Dhamma Joti: Vipassana Centre, Wingaba Yele Kyaung, Nga Htat Gyi Pagoda Road, Bahan, Yangon, Myanmar Tel: [95] (1) 549 290, 546660; Office: No. 77, Shwe Bon Tha Street, Yangon, Myanmar. Fax: [95] (1) 248 174, Email: bandoola@mptmail.net.mm; goenka@ mptmail.net.mm; Email: dhammajoti@mptmail.net.mm

Dhamma Ratana: Oak Pho Monastery, Myoma Quarter, Mogok, Myanmar Contact: Dr. Myo Aung, Shansu Quarter, Mogok. Mobile: [95] (09) 6970 840, 9031 861;

Sri Lanka

Dhamma Kūṭa: Vipassana Meditation Centre, Mowbray, Hindagala, Peradeniya, Sri Lanka Tel/Fax: [94] (081) 238 5774; Tel: [94] (060) 280 0057; Website: www.lanka.com/dhamma/dhammakuta; Email: dhamma@sltnet.lk

Thailand

Dhamma Kamala: Thailand Vipassana Centre, 200 Yoo Pha Suk Road, Ban Nuen Pha Suk, Tambon Dong Khi Lek, Muang District, Prachinburi Province, 25000, Thailand Tel. [66] (037) 403- 514-6, [66] (037) 403 185; Email: info@kamala.dhamma.org

Australia & New Zealand

Dhamma Bhūmi: Vipassana Centre, P. O. Box 103, Blackheath, NSW 2785, Australia Tel: [61] (02) 4787 7436; Fax: [61] (02) 4787 7221, Email: info@bhumi.dhamma.org

Europe

Dhamma Dīpa: PENCOYD, ST. OWENS CROSS, HR2 8NG, UK Tel: [44] (01989) 730 234; Fax: [44] (01989) 730 450; Email: info@dipa.dhamma.org

North America

Dhamma Dharā: VMC, 386 Colrain-Shelburne Road, Shelburne MA 01370-9672, USA Tel: [1] (413) 625 2160; Fax: [1] (413) 625 2170; Email: info@dhara.dhamma.org

South Africa

Dhamma Patākā: (Rustig) Brandwacht, Worcester, 6850, P. O. Box 1771, Worcester 6849, South Africa Tel: [27] (23) 347 5446; Email: info@pataka.dhamma.org

---

शेष विपश्यना केन्द्र के पते, फोन, इमेल निम्न वेबसाइट पर जानकारी प्राप्त कर सकते हैंः-

Website: www.vridhamma.org, www.dhamma.org

ISBN 978-81-7414-324-2
VRI - H6 1